thearyasamaj.org

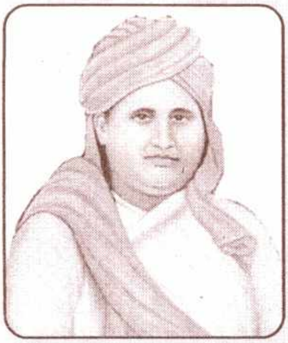

।।ओ३म्।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १४ अंक १० १० अक्टूबर २०१४

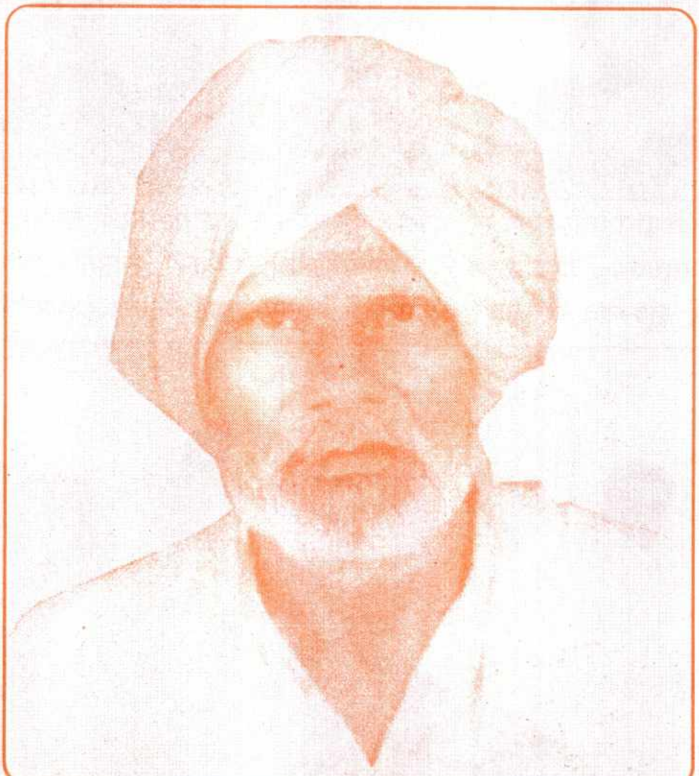

प्रखर वेदसिद्धान्ती, ऋषिभक्त, सुनियोजक, दूरदर्शी आर्य संगठक

डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (प्रो.सु.ब.काले)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बनने पर

* हार्दिक अभिनन्दन *

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन

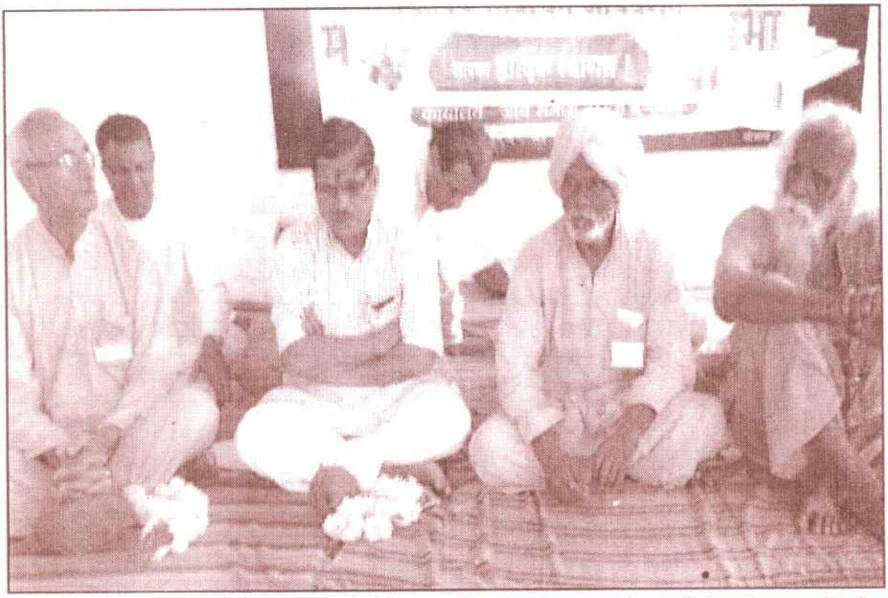

चयन समिति द्वारा सर्वसम्मति से निर्विरोध चुने गये पदाधिकारी-सर्वश्री डॉ.ब्रह्ममुनिजी (प्रधान), माधवराव देशपांडे (मन्त्री), योगमुनिजी (उपप्रधान), स्वामी श्रद्धानन्दजी (संरक्षक), शंकरराव बिराजदार (उपमन्त्री), लखमसीभाई वेलानी (उपमन्त्री)।

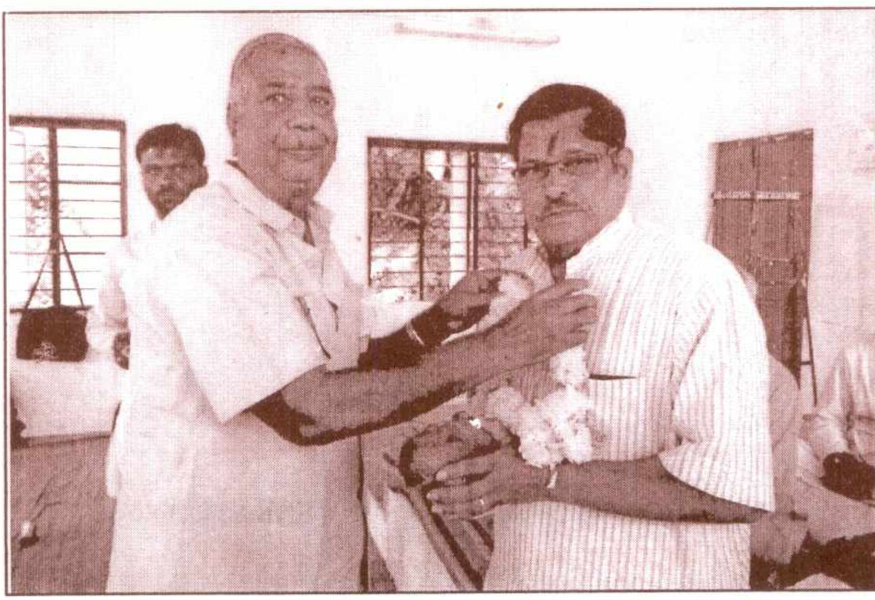

नूतन मन्त्री श्री माधवरावजी देशपांडे का अभिनन्दन करते हुए आर्य समाज परली के मन्त्री श्री उग्रसेनजी राठौर (सभा के नूतन कोषाध्यक्ष)

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ कलि संवत् ५११५ विक्रम संवत् २०७१
दयानन्दाब्द १९० आश्विन १० अक्टूबर २०१४

प्रधान सम्पादक
माधवराव देशपांडे
(मो.० ९८२२२९५५४५)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.० ९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो.०९४२११९५११९०४), प्रो.देवदत्त तुंगार (मो. ०९३७२५४१७७७)
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

-: हिन्दी विभाग :-

१) सम्पादकीयम्..४
२) श्रुतिसन्देश/ गुंजोटी कार्यक्रम ५
३) महाराष्ट्र सभा की नई कार्यकारिणी..............................६
४) वेदज्ञान की व्यापकता, सार्वभौमिकता व नित्यता ९
५) हम सब आर्य, भारतीय हैं....................................१७
६) शोक समाचार..२३

-: मराठी विभाग :-

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी...........................२५
२) सुभाषित रसास्वादः/२ राज्य वक्तृत्व स्पर्धा.......................२६
३) पितर श्राद्ध नव्हे, पितृ यज्ञ......................................२७
४) शोक वार्ता...३३
५) महाराष्ट्र आर्य प्र. सभेचे उपक्रम................................३४

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. ५०/-
आजीवन रु. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होना

thearyasamaj.org

सम्पादकीयम्

कार्यकर्त्ता ही पद के अधिकारी

संस्था या संगठन की सही पहचान उसके कार्यकर्त्ता माने जाते हैं। विचारों व सिद्धान्तो से पूर्णतः एकरूप अनुयायी उस संगठन की शक्ति होती है। पद या अधिकारों की अभिलाषा न रखते हुए स्वार्थरहित भाव से अहर्निश कार्य करनेवाला कार्यकर्त्ता ही सही अर्थों में उस संगठन का आधार होता हैं। ऐसे सर्वतोमना समर्पित कार्यकर्त्ताओं के कारण उस संगठन के विचार विश्व के कोने - कोने में फैलने में मदद मिलती है। यदि उत्तम कार्यकर्त्ता ही नहीं रहेंगें, तो सिद्धान्त व विचार कितनेही उच्च कोटि के क्यों न हों वे संगठन निश्चय ही पीछे रह जाते हैं।

संसार में आज यही दिखाई दे रहा है। विश्वकल्याण की पवित्र भावन न सम्प्रति अपने मन्तव्यों के प्रचार व प्रसार में पिछडते जा रहा है। इसका कारण है सिद्धान्तानुकुल चलनेवाले विद्वानों, प्रचारकों व कार्यकर्त्ताओं का अभाव ! किसी समय यह संगठन क्रियाशीलता के कारण प्रगति के उच्च शिखर पर था। स्वामीजी के पश्चात् पं.गुरूदत्त, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, म. हंसराज आदि तपोनिष्ठ ऋषिभक्तों ने आर्य समाज को अपने त्यागपूर्ण जीवन व बलिदान से सुदृढ बनाया। साथ ही अनेकों उच्चकोटि के विद्वानों व कर्मठ कार्यकत्ताओं ने तन-मन-धन सब कुछ अर्पण कर इस पौंध को सदैव हरा-भरा रखा। एक साधारण आर्य समाजी भी अपनी प्रखर वेदनिष्ठा व पवित्र आचरण के कारण समाज में सुप्रतिष्ठित था व उसकी विश्वासार्हता बहुत ही प्रसिद्ध थी। प्रतिनिधि सभाएं हो या आर्यसमाजें, इनके पदाधिकारी भी सिद्धान्तों पर बहुतही दृढ थे। वेदविचारों पर उनकी अपार श्रद्धा व निष्ठा थी। इसी कारण हमारा अतीत गौरवशाली था। दुर्भाग्य से आज वह स्वर्णिम वातावरण नहीं रहा। बाहर की गन्दगीपूर्ण राजनीति, स्वार्थ, पदलोलुपता, लोकैष्णा आदि दोषोंने इस संस्था में प्रवेश किया हैं। आर्य समाजें वेदप्रचार का केंद्र न बनकर केवल भवन मात्र रह गये हैं। सभा समाजें व आर्यसंस्थाओं में काम करनेवाले कार्यकर्त्ता कम और स्वार्थी, पदलोभी, सिद्धान्तविहीन लोगों की संख्या अधिक दिखाई पड रही हैं। ऐसे में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने निर्वाचन अधिवेशन में पदाधिकारियों का निर्वाचन न करते हुये सर्वसम्मति से उनका चयन किया और अपनी आदर्श परम्परा बनाये रखी। क्रियाशील, कर्मठ व सिद्धान्तनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को सभा के पदाधिकारी बनाया हैं। यह आर्य जगत् के लिए प्रेरणा का विषय हैं। नये पदाधिकारियों को शुभकामनाएं !

-डॉ.नयनकुमार आचार्य

thearyasamaj.org

यज्ञ से सुख की प्राप्ति ।

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ।।

पदार्थ :- जो **(वसोः)** यज्ञ **(शतधारम्)** असंख्यात संसार का धारण करने और **(पवित्रम्)** शुद्धि करनेवाला कर्म **(असि)** है तथा जो **(वसोः)** यज्ञ **(सहस्त्रधारम्)**अनेक प्रकार के ब्रह्माण्ड को धारण करने और **(पवित्रम्)** शुद्धि का निमित्त सुख देनेवाला है **(त्वा)** उस यज्ञ को **(देवः)** स्वयं प्रकाशस्वरूप **(सविता)** वसु आदि तेंतीस देवों का उत्पत्ति करनेवाला परमेश्वर **(पुनातु)** पवित्र करे । हे जगदीश्वर ! आप हम लोगों से सेवित **(वसोः)** जो यज्ञ है उस **(पवित्रेण)** शुद्धि के निमित्त, वेद के विज्ञान **(शतधारेण)** बहुत विद्याओं को धारण करनेवाले वेद और **(सुप्वा)** अच्छी प्रकार पवित्र करनेवाले यज्ञ से हम लोगों को पवित्र कीजिये । हे विद्वान पुरूष वा ज़ानने की इच्छा करनेवाले मनुष्य ! तू **(काम्)** वेद की श्रेष्ठ वाणियों में कौन-कौन वाणी के अभिप्राय को **(अधुक्षः)** अपने मन में पूर्ण करना, अर्थात् जानना चाहता है ।।

यजुर्वेद १/३(महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेदभाष्य से साभार)

चलो गुंजोटी !   ।। ओ३म् ।।   हु. वेदप्रकाश अमर रहें !

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्य समाज गुंजोटी जीर्णोद्धार समिति के द्वारा गुंजोटी में आयोजित

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारी आर्य युवा बलिदानी

- हुतात्मा वेदप्रकाश बलिदान समारोह -

आर्य समाज गुंजोटी भवन जीर्णोद्धार व उद्घाटन समारोह

- यजुर्वेद पारायण यज्ञ व विविध कार्यक्रम -

दि. २४, २५, २६ नवम्बर २०१४ (सोम, मंगल, बुधवार)

सस्नेह निमंत्रण

आमन्त्रित विद्वान

* पू. आचार्य स्वामी बलदेवजी (प्रधान, सार्व. आर्य प्रतिनिधि सभा,दिल्ली)
* मा. श्री प्रकाशजी आर्य (मन्त्री, सार्व. आर्य प्रतिनिधि सभा,दिल्ली)
* पू. श्री स्वामी धर्मानन्दजी (प्रमुख, गुरूकुल आमसेना,उडीसा)
* मा.प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु (आर्य इतिहास गवेषक, अबोहर -पंजाब)
* मा.प्रो.डॉ. धर्मवीरजी (का.प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर)
* मा.पं. भानुप्रकाशजी शास्त्री (आर्य भजनोपदशेक बरेली-उ.प्र.)

इस त्रीदिवसीय समारोह में आप सभी भारी संख्या में आमन्त्रित हैं । पधारकर कार्यक्रमों को सफल बनावें

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन में

पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से निर्विरोध चयन

डॉ. ब्रह्ममुनिजी प्रधान, श्री देशपांडे मन्त्री तथा श्री राठौर कोषाध्यक्ष

९ पदाधिकारी, ७ संरक्षक, २४ अन्तरंग सदस्य व ६ प्रतिष्ठित सदस्यों सह नई कार्यकरिणी का गठन

अनूठे त्याग, तप व समर्पण के बल पर समग्र आर्य जगत् में ख्यातिप्राप्त प्रान्तीय संगठन **महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा** ने अपने निर्वाचन अधिवेशन में पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से चयन करते हुए निःस्वार्थ भावना का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया हैं। दि. २८ सितम्बर २०१४ को सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज परली द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम में सम्पन्न हुए निर्वाचन अधिवेशन में आर्यों ने बडे उत्साह के साथ सभा के पदाधिकारियों का गठन किया है। सर्वश्री स्वामी श्रद्धानन्दजी, प्रा.देवदत्त तुंगार, राजेन्द्र दिवे, लखमसीभाई वेलानी इन चारों की चयन समितिने एकत्र बैठकर विचार विनिमय किया और सही अर्थों में प्रखर वैदिक सिद्धान्तवादी कार्यकर्त्ताओं को पदाधिकारियों के रूप में चयनित किया। सभागृह में आकर जब नये पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की गई, तब सभी आर्यजनों ने एक स्वर से **वैदिक धर्म की जय** के नारे लगाते हुए नये पदाधिकारियों का स्वागत किया व सभीने हाथ ऊंचे कर के सम्मति दर्शाई। प्रधान के रूप में प्रखर वेदधर्मी, दूरदर्शी व्यक्तित्व, कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता डॉ. ब्रह्ममुनिजी का चयन किया गया। मन्त्री के रूप में वैदिक मनीषी, चिंतनशील अध्येता श्री माधवरावजी देशपांडे तथा कोषाध्यक्ष के रूप में अर्थशुचिता का पूरा ध्यान रखनेवाले श्री उग्रसेनजी राठौर को चुना गया। साथ ही उपप्रधान, उपमन्त्री, पुस्तकाध्यक्ष, वेदप्रचार अधिष्ठाता, आर्य वीर दल अधिष्ठाता, वैदिक गर्जना संपादक, संरक्षक, आजीवन सदस्य, अंतरंग सदस्य आदि का चयन सर्वसम्मति से किया गया

इस अवसर पर नये पदाधिकारियों ने अपने सम्बोधन में सभा की गतिविधियों को अधिक बढाने, वेदप्रचार कार्यों का विस्तार करने, आर्य समाजों को सशस्त व समृद्ध करने एवं आर्य संगठन को अधिक मजबूत करने का आश्वासन दिया। नये युग में महर्षि दयानन्द की वेदाधारित मानवतावादी विचारधारा को सर्वत्र फैलाने एवं आर्यत्व की नई पहचान बनाने पर भी सभी ने जोर दिया। समाज व देश में बढती जा रही विभिन्न समस्याओं का

thearyasamaj.org

निवारण करने हेतु आर्य समाज नई दिशा से आगे कैसे बढेगा ? इसपर विचार व्यक्त कर नये पदाधिकारियों ने आर्यों को आश्वस्त किया । इस अवसर पर आर्य समाज परली द्वारा नूतन पदाधिकारियों का स्वागत व अभिनन्दन किया तथा उपस्थित राज्य के सभी आर्य समाज प्रतिनिधियों ने भविष्य में अधिक कार्यवृद्धि हेतु शुभकामनाएं दी।

– महाराष्ट्र सभा की नयी कार्यकारिणी –

१) **प्रधान** – डॉ. श्री ब्रह्ममुनिजी वानप्रस्थी (परली–वैजनाथ)

२) **उपप्रधान** – १) श्री दयाराम बसैये (संभाजीनगर)
२) श्री योगमुनिजी –घुंडियाल (धुलिया)
३)श्री राजेन्द्र दिवे (लातूर)

३) **मन्त्री** – श्री माधवराव देशपांडे (पुणे)

४)**उपमन्त्री** – १) प्रा.श्री देवदत्तजी तुंगार(नांदेड)
२)श्री लखमसीभाई वेलानी (पुणे)
३) श्री शंकरराव बिराजदार (सोलापुर)

५) **कोषाध्यक्ष**– श्री उग्रसेनजी राठौर, (परली–वैजनाथ)

६) **पुस्तकाध्यक्ष**–प्रा.श्री ओमप्रकाश विद्यालंकार–होळीकर (लातूर)

७) **वेदप्रचार अधिष्ठाता**– लक्ष्मणराव आर्य – हुलगुंडे (परली–वैजनाथ)

८) **आर्यवीरदल अधिष्ठाता**– श्री व्यंकटेश हालिंगे (लातूर)

९) **वैदिक गर्जना–संपादक** – प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य, (परली–वै.)

– अंतरंग सदस्य –

१) श्री ओमप्रकाश पाराशर, लातूर
२) श्री एस.सी.नागपाल, पुणे
३) श्री प्रा.अभय कळसकर, देगलूर
४) श्री प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, उदगीर
५) श्री विजयकुमार बंग, उस्मानाबाद
६) श्री सुभाष गायकवाड, सोलापूर
७) श्री संतोष आर्य, जालना
८) श्री अॅड. जोगेन्द्रसिंह चौहान
९) श्री सुरेश गंजेवार, धर्माबाद
१०)श्री सुरेश चिंतावर, धर्माबाद
११) श्री आनंदमुनिजी, करडखेल
१२) अॅड.श्री प्रमोद मिश्रा, धारूर
१३) श्री प्रमोदकुमार तिवारी, धारूर
१४) श्री शंकरराव मोरे, लातूर
१५) श्री गोविंदराव बोड्डावार, मुदखेड
१६) डॉ.श्री प्रकाश कच्छवा, औराद (शहा.)
१७) प्रा.श्री जयनारायण मुंदडा, अहमदनगर
१८) श्री चैतन्य रडे, नशिराबाद

thearyasamaj.org

१९) श्री.डॉ.विठ्ठलराव जाधव, उमरगा
२०) श्री.डॉ.प्रकाश कदम, परभणी
२१) श्री वर्माजी, नासिक
२२) श्री ओमप्रकाश वाघमारे, निलंगा
२३) श्री बभ्रुवाहन शिंदे, शिवणखेड
२४) श्रीमती रमादेवी तिवारी, धारूर

– संरक्षक –

१) पू.श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती
२) श्री कृष्णचंदजी आर्य, पुणे
३) श्री रामपालजी लोहिया, परली
४) श्री बलिरामजी पाटील, निलंगा
५) श्री गुलाबचंदजी लदनिया, हिंगोली
६) श्री हिरामणजी डोईजोडे, औराद
७) श्री कपिलमुनिजी (गंजेवार), धर्माबाद

– प्रतिष्ठित सदस्य –

१) श्री विज्ञानमुनिजी वानप्रस्थी, परली
२) श्री ओमप्रकाशजी होलीकर,लातूर
३) श्री ज्ञानकुमारजी आर्य, लातूर
४) श्री जुगलकिशोरजी लोहिया,परली.
५) श्री वेदमुनिजी (वेदालंकार), धाराशिव
६) श्री आर्यमुनिजी वानप्रस्थी, हदगांव

******

आर्य समाज परली द्वारा क्रियान्वित

श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी, परली-वै.

आर्य समाज परली द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी में सम्प्रति नई-नई आयुर्वेदिक औषधियां बनाई गयी हैं । विभिन्न वनस्पतियों तथा मौल्यवान पदार्थो के सम्मिश्रण योग से बनी ये औषधियां शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं । हाल ही में आयुर्वेद के विशेषज्ञों द्वारा त्रिफला चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, लवणभास्कर चूर्ण, सितोपलादिचूर्ण स्वादिष्टचूर्ण, च्यवनप्राश, आयुर्वेदिक चाय, ब्राह्मीआंवला तेल, आंवला कैन्डी, गोतीर्थासव आदि औषधियाँ बनाई गयी है ।

राज्य की सभी आर्य समाजें इन औषधियों को मंगाकर अपनी संस्था में औषाधलय खोलें । इसके लिये हमारी फार्मेसीद्वारा आर्य समाजों को विशेष छूट दी जायेगी । अतः सभी आयुर्वेद प्रेमी बंधुओं से निवेदन हैं कि वे शीघ्र ही गुरूकुल फार्मेसी से सम्पर्क कर इन बहुगुणी औषधियों को खरीदकर स्वास्थ्य लाभ उठावें तथा अन्यों को भी प्रेरित करें ।

संपर्क - वैद्य विलास बनसोडे (फार्मेसी प्रमुख) मो. ९०११६०४६११

निवेदक - मन्त्री, आर्य समाज परली-वैजनाथ

thearyasamaj.org

वेदज्ञान की व्यापकता, सार्वभौमिकता और नित्यता

-डॉ. चंद्रकांत गर्जे

विश्व के बुद्धिजीवियों में वेद के काल निर्णय के सन्दर्भ मे भले ही विभिन्न विचारधाराएँ प्रचलित हों, किन्तु वे सभी मान्य करते हैं कि वेद संसार की प्राचीनतम रचना है । कतिपय विद्वान केवल ऋग्वेद को ही प्राचीन मानते हैं । यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की रचना पश्चात् काल में हुई, पर ऐसा नहीं है । सत्य यही है कि चारों वेद प्राचीन हैं, ईश्वरीय ज्ञान हैं, अपौरूषेय हैं । वेदान्त का प्रतिपादन है कि सृष्टि के प्रारम्भ में ही परमात्मा ने दिव्य ज्ञान ब्रह्मा को दिया और यह दिव्यज्ञान ऋषियों ने ब्रह्मा से पाया । ऋषियों ने अपने तपोबल से दिव्यवाक् को देखा और उसी को अभिव्यक्त किया (श्वेता.उप.६.१८ व ऋग्.१०.१७.३)। वे दृष्टा मात्र हैं न कि कर्त्ता - **ऋषिर् दर्शनात्** । ऋषियों की अभिव्यक्ति ही चार वेद हैं - **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद,** जिनके क्रमशः दृष्टा ऋषि हैं - अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा । अतः वेद दिव्या-वाक् है । वेद माननीय अन्तरात्मा का सुना हुआ अनादितत्व का सङ्गीत है । भारत के शिक्षाविद् भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व.राधाकृष्णन् ने अपने उपनिषद के अंग्रेजी अनुवाद की प्रस्तावना में कहा है - 'The Vedas were seen and heard by seers when they were in state of inspiration and who inspired then is god.'

वेद का अर्थ है ज्ञान । वेद शब्द **'विद् ज्ञाने, विद् सत्तायाम्, विद्लृ लाभे और विद् विचारणे'** इन चार धातुओं से बना है । मनु ने **सर्वज्ञानमयो हि सः।** अर्थात् वेद ब्रह्माण्ड के समस्त ज्ञान-विज्ञान से युक्त भण्डार हैं, ऐसा कहा है । (मनु.१.३) मनु का मान्यता है कि वेद अपौरूषेय है । वेदज्ञान अपौरूषेय होने से ज्ञान में किसी प्रकार के भ्रम की सम्भावनाएँ नहीं हैं । आगे वे कहते हैं - **वेदश्चक्षुः सनातनम्** । वेद सनातन चक्षु हैं (मनु.१२.१४)। चारों वर्ण, चारों आश्रम, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक और भूत, भविष्य और वर्तमान में होनेवाले पदार्थों को वेद से ही जाना जाता है । महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रारम्भ में कहा है- **'ईश्वर ने प्रथम वेद रचे हैं । वेदों का रचयिता ईश्वर विज्ञानमय, अनन्त विद्यामय, विद्याप्रद, विद्या का प्रकाश करने वाला है ।'** ईश्वर की इन ज्ञान विशेषताओं का प्रतिरूप ही वेद में प्रतिबिम्बित हुआ है । इसीलिये कहा जाता है - वेद ईश्वर की वाणी है, निःश्वास है, दिव्यज्ञान का अक्षय निधि है । वेदवाणी से

thearyasamaj.org

जगत् की सारी प्रवृत्तियाँ संचालित हैं ।

***नास्ति वेदात्परं शास्त्रम् ।** –

वेदों से बढकर कोई शास्त्र नहीं । चारों वेदों में कुल २०४१६ ऋचाएँ हैं । इन ऋचाओं की व्याख्या करनेवाली एक हजार से अधिक शाखाएँ थी, जो ऋषियों के नाम से जुडी हुई थी । इस वैदिक ज्ञान का पौधा आगे चलकर एक विशाल वट वृक्ष का स्वरूप धारण करता है, वह इस तरह है – **१. चार उपवेद** – आयुर्वेद, धनुर्वेद,गान्धर्ववेद , अर्थवेद ।

२. छह वेदांग – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष् ।

३. छह उपाङ्ग – न्यायदर्शन, वैशेषिक दर्शन, सांख्य दर्शन, योगदर्शन, पूर्व मीमांसा, उत्तम मीमांसा (वेदान्त) ।

यह वेदज्ञान का सङ्केत मात्र है, पूर्ण विवरण विश्लेषण नहीं । सृष्टि के प्रारम्भ से प्राप्त यह वैदिक ज्ञान विज्ञानसम्मत, त्रिकालाबाधित और सनातन है । कई ऋषि, विद्वान, वैज्ञानिक, ज्ञानवेत्ताओं ने वेद से बीज स्त्रोत पाकर वेदज्ञान के विभिन्न आयामों को उद्घाटित किया है । वर्त्तमान में विश्व के वैज्ञानिक वेद पर शोध कर्म में जुटे हैं । ज्ञान – विज्ञान के क्षेत्र में जो खोज किये जाने लगे है, वे सभी वेदों में बीज के रूप में निहित हैं – इस निष्कर्ष पर वे पहुंचे हैं ।

*** सृष्टि-विज्ञान-**

परमात्मा की कृति सृष्टि का चक्र अनादि काल से चल रहा है। इस सृष्टि उत्पत्ति का भी अपना एक विज्ञान है । सृष्टि रचना की पृष्ठभूमि में शाश्वत सत्य क्या है ? सृष्टि की विकास प्रक्रिया में विज्ञान क्या है ? इस सम्बन्ध में वेदों में एक परिपूर्ण संकल्पना पायी जाती है – शतपथ आदि ग्रन्थों तथा उपनिषदों में सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, दिन-रात, पक्ष-मोह, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग का वैज्ञानिक विश्लेषण देखने को मिलता है । महर्षि दयानन्द ने तैत्तिरीय उपनिषद के वचन को उद्धृत करते हुए – सृष्टि-उत्पत्ति विज्ञान को विश्वेषित किया है । उस परमेश्वर और प्रकृति से आकाश, आकाश के पश्चात् वायु,वायु के पश्चात् अग्नि, अग्नि के पश्चात् जल, जल के पश्चात् पृथिवी, पृथिवी से औषधि, फिर अन्न, वीर्य, पुरूष (शरीर)उत्पन्न होता है (सत्यार्थप्रकाश – अष्टम समुल्लास – सृष्टि उत्पत्ति-स्थिति प्रलय-विषय) ।

*** अग्नि-विज्ञान** –

ऋग्वेद अग्नि विज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है । ऋग्वेद ८, ९ मण्डल को छोडकर अन्य मण्डलों का प्रारम्भ अग्नि से किया गया है, जिससे अग्नि की महत्ता प्रतिपादित होती है । अग्नि विज्ञान का श्रेय प्राचीन ऋषि अथर्वा को दिया जाता है । यजुर्वेद कहता है – हे अग्नि ! अथर्वा नामक ऋषि ने मन्थन कर तुम्हें प्रकट किया है । ऋग्वेद व अन्य

thearyasamaj.org

वेदों में अथर्वा शब्द और उसके रूप देखने को मिलते हैं। अग्नि के पारिभाषिक करीब ७० शब्द हैं। अग्नि सूत्र में ४५ प्रकार की अग्नियों का वर्णन है। अग्नि को ऊर्जा का प्रतिनिधि माना गया है। अग्नि की उपयोगिता सिद्ध होते ही अनेक आविष्कारों का प्रारम्भ हुआ। एक आविष्कार है - **यज्ञों का प्रचलन**। ऋषि-मुनियों ने यज्ञों के माध्यम से अनेक विज्ञानों की नींव डाली, जिससे ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र उत्तरोत्तर प्रगति कर गया। पवित्र अग्नि के कारण ही विश्व में मानव संस्कृति का विकास हुआ। अमेरिका में तो **अग्निहोत्र** विश्वविद्यालय में यज्ञ पर शोध - कार्य चल रहा है।

*** सूर्य-विज्ञान-**

अग्नि की गुण -विशेषताओं को लिए हुए सृष्टि-रचना से जुडा हुआ सूर्य का अपना एक अलग सिद्धांत है। ऋग्वेद के १.५०.१ से १३ तक की ऋचाएँ सूर्य-विज्ञान को विश्लेषित करती हैं। पृथिवी अपनी कक्षा में सूर्य के चारों और घूमती है, चन्द्रलोक पृथिवी के चारों ओर घूमता है। वेद सूर्य को चराचर जगत् का उत्पादक कहते हैं - **नूनं जनः सर्वेण प्रसूतः।** और उसे ही **प्राणं प्रजानाम्** कहते हैं। सूर्य में एक आकर्षण शक्ति है, जो पूरे द्युलोक को रोके हुए है। वैदिक ऋषि सूर्य देवता की प्रशंसा बार-बार करते हैं। सूर्य इन्द्र है, सूर्य इस संसार को स्थिर रखने वाला है और संसार का रक्षक है। (ऋग् ७.६०.२) सूर्य देवता मनुष्य की चिकित्सा करने वाले हैं -**सूर्यः कृणोतु भेषजम्।** सूर्य को विष नाशक भी कहा गया है। **सूर्ये विषमः सृजामि**।(ऋग् १.१९.१०) सूर्य है, इसलिये प्रकाश है, प्रकाश है तो जीवन है, सूर्य नहीं तो अन्धकार है। अन्धःकार जहाँ है, वहाँ मृत्यु है। वेदों में सूर्य की आकर्षण शक्ति तथा मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, पृथिवी चन्द्रमा की सूर्य की परिक्रमा का विश्वेषण भी है।

(ऋग् १०.७२.१-९)

सूर्य विज्ञान और सौर ऊर्जा-विद्या का समीप का सम्बन्ध रहा है। सौर ऊर्जा के यन्त्र द्वारा अन्न परिष्कार (अथर्व.६.११६.१), सौर ऊर्जा से चलने वाला विमान (ऋग् ४.३६.१), सौर ऊर्जा का रथ (ऋग् १०.२६.९), सौर ऊर्जा से गरम किए घर आदि वेदों में आए सौर ऊर्जा के वर्णन सौर विज्ञान को अभिव्यक्त करते हैं।

*** नक्षत्र-विज्ञान -**

नक्षत्र का सामान्य अर्थ है- तारा। आकाश में साथ-साथ चमकने वाले भव्य प्रकाश, जो भुवनों में तेजी से घूमते रहते हैं, उन्हें नक्षत्र कहा गया है। नक्षत्र के प्रथम वैज्ञानिक ऋषि गार्ग्य हैं। ऋग्वेद की ६.६७.६,७.८१.१, १०.१२.७ आदि ऋचाएँ तथा यजुर्वेद के ३०.१०, १४, १९, २२, २४ व अथर्व के ६.११०.३, १०.२.२२ ये मन्त्र नक्षत्र-विज्ञान को

thearyasamaj.org

विश्लेषित करते हैं । अथर्ववेद के १९ वें काण्ड में २७ नक्षत्र गिनाए गये हैं । विषय का विस्तार न हो इसलिए यहां केवल संख्या दर्शायी गयी है, उनकी सूची नहीं । श्री बी.पी.काणे ने अपने ग्रन्थ **धर्म शास्त्र का इतिहास** में नक्षत्रों के वैदिक नाम, आधुनिक नाम, उनके वैदिक देवताओं की विस्तृत रूप से जानकारी दी है ।

*** वृष्टि विज्ञान-**

वायु कल्याणकारी होकर बहती रहें, सूर्य कल्याणकारी हो, वह तपता रहे, अग्नि कल्याणकारी हो और गरजता हुआ मेघ कल्याणकारी बन वर्षा करते रहे । इस प्रकार वेदों मे निहित वृष्टि की प्रक्रिया विश्लेषित है -

शं नो वातःपवतां शं नस्तपतु सूर्यः।
शंनःकनिक्रदद्देवःपर्जन्योऽअभिवर्षतु ।।

प्राचीनकाल में वर्षा को नियन्त्रित करने के लिये यज्ञ सम्पन्न किय जाते थे । अतिवृष्टि को थामने और वर्षा के बरसने की यज्ञ-विद्या भी प्रचलित थी ।

*** कृषि और वनस्पति विज्ञान-**

वैदिक चिन्तन का फल है **कृषि और वनस्पति-विज्ञान** । यह विज्ञान न केवल मनुष्य अपितु प्राणिमात्र की जीविका का आधार है । ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद से कृषि, वनस्पति सम्बन्धित जानकारी प्राप्त होती है । कृषक, भूमि, हल, बैल ये मुख्यतः प्राचीन कृषि के साधन रहे हैं । हल के फाल की महत्ता को ऋग्वेद व्यक्त करते हैं - 'हे सौभाग्यवती फाल ! तू भूमि में चलनेवाली हो, तू सुफला हो, सौभाग्य देनेवाली हो ।' (ऋ.४.५७.६) कृषक को किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, इसपर अथर्ववेद का मन्त्र दर्शाता है- 'हे कृषक ! बीज बोने योग्य भूमि को तैयार कर, उसे संस्कारित कर, बीजों को बो, भूमि को खाद दो, उसे पानी से सींचो, उसे उर्वरा करो, ताकि अन्न का उत्पादन को सके ।' भूमि को उर्वरा बनाने के लिये यज्ञ का विधान भी बताया गया है - **पृथिवीं च यज्ञेन कल्पताम्** । (यजु.१८.१२) 'वेदों में वर्षा, वनस्पति, वनससम्पदा, जल, वायु, पृथिवी, मिट्टी की महत्ता दर्शायी गयी है ।

मानव जीवन के साथ समीप का सम्बन्ध वनस्पति से भी है । निघण्टु रत्नाकर इस आयुर्वेद ग्रन्थ में हजारों वनस्पतियों का उल्लेख है, देवताओं के नाम भी दिये हैं । मनुष्य वनस्पति को अन्न के रूप में ग्रहण करता है और साथ ही औषधियों के रूप में भी । किसी समय भारत कृषिप्रधान देश रहा है । इस कथन की पृष्ठभूमि में मात्र आर्यों का कृषि, वनस्पति विषयक विधान ही हैं, जो वेदों में है ।

पर्यावरण विज्ञान-

वेदों में वन, शुद्ध अन्न, शुद्ध जलवायु का वर्णन मिलता है, जो पर्यावरण का सूचक है । प्रदूषण निवारण

thearyasamaj.org

के लिए अनेक सूत्र वेंदो में पाये जाते है। ऋग्वेद में जल, वृक्ष, वन, औषधि, पर्वत, सूर्य, पशु को मानव रक्षक बताया गया है। प्रदूषण को नष्ट करने के लिये यज्ञ का आवाहन भी किया गया है। यज्ञ में गोघृत, अनेक तरह की समिधाएँ, औषधि से युक्त सामग्री, वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के साथ, अग्नि प्रज्वलित यज्ञ में समर्पित कर, वातावरण को शुद्ध बनाया जाता रहा है। वेद पर्यावरण के सुरक्षा विज्ञान को व्यक्त करते हैं।

*** आयुर्वेद शास्त्र-**

आयुर्वेद वह प्राचीन शास्त्र है, जिसमें जीवन के सत्य और असत्य सिद्धांत बताये गये हैं। आर्यों की मान्यता है कि आयुर्वेद का ज्ञान सीधे प्रकट होकर, प्राप्त हुआ है। आयुर्वेद- अथर्ववेद का उपाङ्ग माना गया है। स्वास्थ्य-रक्षा, औषधोपचार यह आयुर्वेद का विषय रहा है। वेदमन्त्रों में चिकित्सा सम्बन्धी जानकारी मिलती है। आयुर्वेद का महान् ग्रन्थ आत्रेय कृत **चरक संहिता है**। ऋषि आत्रेय, ऋषि भारद्वाज द्वारा चलाए गए आयुर्वेद शास्त्र के अध्येता थे। काय चिकित्सा के वे आचार्य थे। शारीरिक विकृतियाँ तथा उनके निदान-औषधियों का विस्तृत वर्णन चरक संहिता में मिलता है।

शल्य चिकित्सा का भी अपना एक महत्व है, जिसके प्रणेता ऋषिवर सुश्रुत हैं। शल्य चिकित्सा में टूटे हुए अंङ्गों को पट्टियों का सहारा देकर जोडना, बहते खून को रोकना, टूटे शरीर हो ज्यो का त्यों रखने की प्रक्रिया शल्य चिकित्सा है। (ऋ.१.१६३.९/१.११६.१५) सौ धमनियों की नाडियाँ और हजार सिराओं का वर्णन अथर्ववेद में मिलता है।

*** ज्योतिष विज्ञान-**

वैदिक ऋषि प्रकृति के हर क्षण परिवर्तन के सूक्ष्म निरीक्षक थे, उनकी बुद्धि प्रखर और उच्चकोटि की थी। वे सतत नयी-नयी खोज में लगे रहते थे, उनमें ज्योतिष विज्ञान भी एक है। ज्योतिष विज्ञान में सूर्य, चंद्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू-केतु आदि की जानकारी यजुर्वेद में है। इसके साथ ही ज्योतिष गणित, ज्योतिष फलित, ज्योतिष सिद्धात इन तीनों ज्योतिषों का उल्लेख वेदों में मिलता है। ज्योतिष विज्ञान के क्षेत्र में ऋषि लगध का नाम लिया जाता है, जिन्होंने ज्योतिष विज्ञान को व्यवस्थित करने के लिये पाठ्य ग्रन्थ संकलित किया। इसके दो पाठान्तर भेद हैं - ऋग्वेद ज्योतिष् और यजुर्वेद ज्योतिष्।

*** गणित विद्या-**

अंक गणित, बीज गणित, ज्यामिति आदि गणित विद्या का स्त्रोत वेद ही रहा है। अंक गणित का मूल ऋग्वेद में, उसका विकसित रूप यजुर्वेद मे देखने को मिलता है। अंक विद्या के प्रथम ऋषि हैं मेधातिथि, जिन्होंने १ से १० अंक तक

thearyasamaj.org

की गणना व्यक्त की है । मेधातिथि के नाम से ऋग्वेद में ३१३ ऋचाएँ हैं । दस, दस गुणे (दशम), विंशति, शतशः सहस्त्र, सहस्त्रस्ता, अयुत, नियुत, प्रयुत, अर्बुद अंको की गणना ऋग्वेद में हैं ।

वैदिक गणित का अध्ययन पहली बार भारतीय कृष्ण तीर्थ गोवर्धन मठ के शंकराचार्य ने किया है । यह वैदिक गणित पारम्परिक गणित से भिन्न है । १६ सूत्रों पर आधारित यह वैदिक गणित है, जिसमें जटिल प्रश्नों के हल के साथ, खगोलशास्त्रीय नक्षत्रगत तथा सौर मण्डल से सम्बन्धित गुत्थियाँ भी वैज्ञानिक रीति से सुलझायी जा सकती है ।

गणितविशेषज्ञों की मान्यता है कि बीज गणित का मूल अंक गणित में ही है, जो आगे चलकर अंकगणित से भिन्न हुआ । ब्रिटीश विश्व कोष में प्राचीनकाल से सत्रहवी सदी तक के बीजगणित की जानकारी दी गयी है । ज्यामिति के विज्ञान का उद्भव वैदिक यज्ञ-वेदी के निर्माण करने के सिलसिले में हुआ है । ऋषि बौधायन ज्यामिति के प्रथम तत्वज्ञ माने जाते हैं । इन्होंने पैथागोरस से पूर्व विकर्ण वर्ग के प्रमेय को समझाया था । त्रिभुज आयात और समलम्ब, चतुर्भुज का विज्ञान मूलतः भारत का है ।

*** विमान विद्या** –

वेदों में अन्तरिक्ष का वर्णन आता है । साथ ही अन्तरिक्ष यात्रा का वर्णन भी आता है । अन्तरिक्ष यात्रा का माध्यम रहा है यान अर्थात् वायुयान । यद्यपि वेद में वायुयान यह शब्द विमान शब्द के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ, किन्तु प्रयुक्त हुए शब्द वायुयान को अभिव्यक्त करते हैं ।

वैज्ञानिक ऋषि अगस्त्य और भारद्वाज ने विमान विद्या का विकास किया । अगस्त्य संहिता में दो प्रकार के विमानों का विवरण मिलता है, जिनमें विमान विद्या के ३२ रहस्यों को उद्घाटित किया गया है । उन्होंने तीनों स्थानों-पृथिवी, जल, वायु में चलने वाले वाहन का वर्णन अपने ग्रन्थ में किया है, जो कि विद्युत, तेल और बाष्प शक्ति से संचलित है ।

ऋषिवर स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में **नौ विमानादि विद्या विषय** इस अध्याय में वेदों की कई ऋचाओं को व्यक्त करते हुए नाव, विमान और रथ आदि जो पानी, आकाश और पृथिवी पर चलनेवाली सवारियाँ हैं, उनका विवरण प्रस्तुत किया है । यान के बनाने की विधि, यान की निर्माण मे प्रयुक्त साधनों - पहिए, जुडे हुए ६० कला यन्त्र, लोहा, तांबा, चांदी आदि से निर्मित वज्र अंगों की चर्चा भी उन्होंने की है । विमान को हर दिशा में मोडने, उसे ऊपर नीचे उतारने की प्रक्रिया भी वर्णित है ।

वेदों में प्रयुक्त यह विमान विद्या, आधुनिक वैज्ञानिक जगत् में विमानविद्या को जन्म देने, उसे विकसित करने का

thearyasamaj.org

आधार बनी है । बम्बई में तलपदे तथा तत्पश्चात् विदेश में राईट बन्धु द्वारा विमान उडान के किये गये प्रयास इसी बात को दर्शाते हैं । वेदज्ञान की कोई सीमा नहीं है । अपने लेख की मर्यादा की ध्यान में रखते हुए इतना कहा जा सकता है कि भौतिक अभ्युदय के लिये विविध प्रकार का विज्ञान, शिल्प, उद्योग, विविध कलाएँ वेद में विश्लेषित हैं। नाट्यशास्त्र के मौलिक तत्व, खगोलशास्त्र पदार्थ विज्ञान, रसायन, विज्ञान, परमाणु विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीति, समाजशात्र आदि बीज रूप में वेदों में विश्लेषित हैं।

*** वेदों की सार्वभौमिकता-**

ईश्वर विराट् और अनन्त है । उसके द्वारा निर्मित सृष्टि भी विराट् और अनन्त है । इस सृष्टि में निहित ज्ञान और विज्ञान की कोई सीमा नहीं है, जिसका विश्वेषण हमें वेदों से प्राप्त होता है । वेद स्वयं और स्वप्रमाण है, इस दृष्टि से वेद अनादि और त्रिकालातीत हैं । सम्पूर्ण जगत् का एक ही मूलतत्व निम्न है -

सदैव सौम्येदमग्र आसीद्
एकमेवाद्वितीयम् ।

प्रो.मैक्समूलर कहते हैं कि वेदों को हम इसलिये आदि सृष्टि से नहीं कहते हैं कि उनसे पूर्व का कोई अन्य लिखित चिह्न नहीं मिलता, अपितु वेद के भीतर जो भाषा, धर्म, ज्ञान हमें मिलता है, वह हमारे सामने इतनी प्राचीनता का दृश्य दिखलाता है कि कोई भी मनुष्य उस प्राचीनता को वर्षों की संख्या में नहीं ला सकता । (Indian What Can it reach us)

वैदिक सम्पत्ति ग्रन्थ इस ग्रन्थ में पं. रघुनन्दन शर्मा का कथन है कि वेद आदिम कालीन है, अपौरूषेय है, अतएव उनमें जो सार्वभौम शिक्षा दी गई है, वह निर्भ्रान्त है और संसार के समस्त मनुष्यों के लिये उपयोगी तथा प्राणिमात्र के लिये कल्याणकारी है ।

*** वेदों की नित्यता -**

नित्य दो प्रकार का होता है -एक अपरिणामी नित्य, जिसमें परिवर्तन की कोई सम्भावना नहीं होती, उदा. परमात्मा । दूसरा ऐसा नित्य है, जो लाखों हेरफेर होते हुए भी सदा रहता है, उदा. प्रकृति । जैमिनि मुनि शब्द को नित्य मानते है-**नित्यस्तु स्याद्दर्शनस्य पदार्थत्वात्** (पूर्व मीमांसा १.११.१८), कणाद (वैशेषिक शास्त्र) की मान्यता है कि वेद ईश्वरोक्त हैं, इसमें सत्य विद्या प्रतिपादित है । चारो वेद नित्य हैं, उनकी विद्याएँ नित्य हैं । गौतममुनि (न्याय शास्त्र,) वात्स्यायन मुनि, पतजंलि आदि ऋषि - मुनि वेदों को नित्य मानते हैं । महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वेद नित्यत्व के विषय में प्रकाश डाला है **निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतःप्रामाण्यम्** (महर्षि कपिल - सांख्यदर्शन सूत्र) ईश्वर की जो स्वाभाविक विद्या शक्ति है, उससे प्रकट होने से वेदों का नित्यत्व और स्वतः

thearyasamaj.org

प्रमाण सब मनुष्यो को स्वीकार करना चाहिए । ऋषिवर की मान्यता है कि परमेश्वर के सामर्थ्य के कारण सब जगत् उत्पन्न होके विद्यमान होता है, जिसका कारण कोई भी नहीं, अर्थात् स्वयं कारण रूप हो उसको नित्य कहते हैं । जो सदा निर्विकार स्वरूप, अज, अनादि, नित्य, सत्य सामर्थ्य से युक्त और अनन्त विद्यावाला परमेश्वर है, उसके ज्ञान में वेदों के सदैव वर्तमान रहने से वेदों का सत्यार्थयुक्त और नित्य, सब को मानना योग्य है ।

वेद का भारतीय संस्कृति में गौरवपूर्ण स्थान रहा है । वेद अगाध ज्ञान के भण्डार है । भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है -

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः। यज्ज्ञात्वानेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यं शिष्यते ।

(श्रीमद्भगवद्गीता)

अर्थात् मैं तुझे विज्ञान सहित वह ज्ञान विशेष रूप से बता देता हूँ, जिसे जान लेने से कुछ जानने की आवश्यकता नहीं रहती । वेदों में समस्त मनुष्यों के लिये नैतिक और आत्मिक तथा भौतिक अभ्युदय के लिये विविध प्रकार का ज्ञान निहित है और इस ज्ञान में कहीं पर काट-छांट की कोई गुंजाईश नहीं है । एक समय ऐसा था कि भारतवर्ष इन वेद विद्या, ज्ञान-विज्ञान के कारण ही विश्व गुरू माना गया, परन्तु पिछले कुछ वर्षो से वेदज्ञान की धारा हसमे दूर होती नजर आ रही है । कारण वेद भण्डार को ही नष्ट करने के काफी क्रूर प्रयास किये गए । इतिहास इस बात का साक्षी है । फिर भी वेद नित्य है । आधुनिक युग के प्रारम्भ से विश्व के बुद्धिजीवियों का दृष्टि प्राचीन वेदों पर गयी है । नये नये खोज किये जाने लगे हैं । महर्षि अरविन्द की मान्यता है कि जहाँ तक प्राचीन वेदों का विज्ञान पहुंचा था, आज का विज्ञान वहाँ पहुँच नहीं सका है । आगे वे कहते हैं- 'मुझे न विज्ञान चाहिए, न धर्म, न थियोसफी चाहिए, मुझे तो केवल वेद चाहिए ।' पाश्चात्य जीव वैज्ञानिक सेसिलवोईस हेमान का कहना है कि मैं विज्ञान के साम्राज्य में, जहाँ भी पदार्पण करता हूँ, वहीं मुझे नियम, व्यवस्था और क्रम सर्वोच्च सत्ता का प्रमाण मिलता है ।

महर्षि दयानन्द तीन हजार ग्रन्थों के स्वाध्याय के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि वेद से मनुष्य का मनुष्यपन और सत्यज्ञान सुरक्षित रह सकता है । उन्होंने सकल जगत् को **'वेदों की और लौटो'** का आवाहन किया था । यह नारा भूतकाल में लौटने का नहीं था, अपितु विश्व के उज्ज्वल पथ का निदर्शन था ।

- ११, भोसले इलायट, भोसले नगर, शिवाजी नगर, पुणे - ०७

thearyasamaj.org

हम सब आर्य, भारतीय हैं ।

–डॉ. ब्रह्ममुनिजी वानप्रस्थ

सम्प्रति देश की अवस्था बहुत ही बिगड चुकी है । पन्थवाद, जातिवाद, अनेकों (अ)धार्मिक भावनाएं, परस्पर विरोध, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, घोटाले, बिमारियां, आत्महत्याएं, हत्याएं, पागलपन, अशान्ति आदि समस्याओं के कारण जनता तंग का चुकी हैं । मानवता समाप्त होती जा रहीं हैं । मानव अंदर से खोकला हो रहा है मनुष्य की प्रवृत्ति, नियत, ज्ञान, संस्कार आदि भी बिगड चुके हैं । अज्ञान, अन्धविश्वास, गलत रूढि परम्पराओं व धारणाओं में सभी फंसते जा रहे हैं । इन सभी समस्याओं के लिए जिम्मेदार माने जानेवाले सरकार व राजनेताओं को दूर हटाने व सत्ता में परिवर्तन लाने हेतु आन्दोलन भी किये गये । समाजसेवक अण्णा हजारेजी, योग गुरू बाबा रामदेवजी आदियों ने इसके लिये अनशन तक किया । विरोधी दल भी शासन के विरोध में आवाज उठाते रहें।

पिछले तीन-चार माह पूर्व देश में लोकसभा के चुनाव हुए । इस में भाजपा ने श्री नरेन्द्र मोदीजी को प्रधानमन्त्री के उम्मीदवार के रूप में घोषित किया । श्री मोदिजी ने पूरे देश का भ्रमण किया । अपने ओजस्वी भाषण में जनता को आश्वस्त करते हुए उन्होंने कहा- 'मैं सभी का हूँ और सबके कल्याण के लिए ही काम करूंगा ।' उनके इस प्रभावपूर्ण भाषणों को सुनकर लोगों ने भी उनपर विश्वास रखा और उन्हें प्रधानमन्त्री बनाने की दृष्टि से भाजपा व उनके सहयोगी दलों के उम्मीदवारों को पूरे बहुमत के साथ चुनकर दिया । वोट डालते समय मतदाताओंने यह नहीं देखा किउम्मीदवार कौन है और वह कैसा हैं ? केवल मोदीजी प्रधानमन्त्री बनने चाहिये, अतः इसके लिए पूरा बहुमत होना आवश्यक है, यह जानकर जनता ने भारी बहुमत के साथ भाजपा को भारी जीत दिलाई । वस्तुतः इसका श्रेय सिर्फ मोदीजी को ही जाता हैं, किन्तु इस मोदी लहर को अस्वीकार करते हुए वरिष्ठ नेतागण इसका श्रेय भाजपा व रा.स्व.संघ को देने लगे । विश्व हिन्दू परिषद तथा अन्य हिन्दू संगठन भी मोदी विजय पर्व को हिन्दुत्व की विजय मानने लगे । इतना ही नहीं वे इसका अन्वयार्थ भी यही लगाने लगे कि यह सारा बहुमत हिन्दू लोगों तथा हिन्दुत्व के पक्ष में हैं । रा.स्व.संघ के सरसंघचालक प्रमुख श्री मोहनजी भागवत तो इस देश को

thearyasamaj.org

हिन्दुस्थान, हिन्दू राष्ट्र बनाने की घोषणा कर रहे हैं । गोवा के उपमुख्यमंत्री तथा श्री तोगडिया भी बहुत कुछ कहते हुए नजर आये ।

ये सारी बातें अविवेकपूर्ण हैं । यह देश तो भारत देश हैं, जिसका प्राचीन नाम आर्यावर्त है । एक समय यह देश सारी दुनियां का गुरू रहा हैं । वेद, उपनिषद, दर्शन, आदि विद्याओं का उगमस्थान यही देश रहा है । ऋषि-मुनियों की साधना से पवित्र हुई यह धरती आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती हैं । अन्य देशों के लिए आत्मजागृति का केन्द्र यही देश रहा है । मानवमात्र के सुख, शान्ति, आनन्द, सुरक्षा, समृद्धी, ऐश्वर्य की इच्छापूर्ति का स्थान यही देश रहा हैं । ईश्वरीय शाश्वत ज्ञान जिन साधकों के पास रहा, वह देश भारत ही है । इसी देश में सभी प्रकार के आर्ष ग्रन्थों की रचना हुई, जो कि सार्वभौम (ग्लोबल) व सबके सर्वकाल कल्याण व संपूर्ण हित का है । यह ज्ञान मानवसहित प्राणिमात्र के कल्याण हेतु माना जाता है । आत्मा की कोई जाति, पन्थ, प्रान्त, देश, लिंग आदि नहीं है । इस वेदज्ञान में किसी भी प्रकार की संकीर्णता अथवा पक्षपात आदि लेशमात्र भी नहीं है । सबको समान न्याय मिलें, यही वेदों का उद्देश्य है । वेद समग्र मानवजाति विश्वबंधुत्व की शिक्षा प्रदान करते हैं । सूर्य, चन्द्र, हवा, पानी, प्राणि, वनस्पति, अग्नि, विद्युत ये सभी आज भी किसी प्रकार का पक्षपात नहीं करते । उनके सम्मुख जाति, पन्थ आदि भेदभाव बिलकुल नहीं है । इन बातों का प्रत्यक्ष अनुभव हम सबके सामने हैं । बच्चे जब पैदा होते हैं, तब उन पर किसी जाति, पन्थ अथवा प्रान्त या देश की कोई मुहर नहीं रहती । अतः निसर्ग आज भी ईमानदार हैं, किन्तु दुर्भाग्य से मनुष्य ने ज्ञान, स्वार्थ, मतलब की आड में मानवमात्र को विभाजित कर दिया है, जो कि सरासर गलत है । ईश्वर की व्यवस्था में यह सबसे बडी बेईमानी, कृतघ्नता, नीचता है । इसी का फल है कि आज हमारे सामने अनेकों समस्याएं खडी है ।

आज भारत में अनेंकों पन्थों व जातियों के लोग रहते हैं । इन जाति व पन्थों के अनुयायी लोगों को उचित है कि वे निसर्ग के इस सत्य को देखे और उस पर विचार व आचरण करें । साथ ही वे इतिहास के सत्य तथ्यों पर भी दृष्टि डालें । इतिहास यह बताता है कि महाभारत के युद्ध तक दुनियां में कोई (मनुष्यकृत) पन्थ या जाति नहीं थी । महाभारत का युद्ध तो भाई-भाइयों में आपस में लडकर हुआ । सारी दुनियां के लोग उस समय मानव के रूप में ही

thearyasamaj.org

पहचाने जाते थे । मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए वेद, उपनिषद, दर्शन, अध्यात्म पढाया जाता था । मनुष्य में जब पक्षपात, संकीर्णता, हठधर्मिता, बुरी प्रवृत्तियां आदि प्रबल होती गई, तब लोग वेदमार्ग को छोडकर गलतियां करने लग गये । किसी विचारवान व्यक्ति ने इन दोषों को दूर करने की बात कही, तो उसे ही दोष देना शुरू हुआ । इसके विपरीत ऐसे अच्छे व्यक्तियों को ही दोषी मानकर व उनकी गलतियां बताकर उन्हें अलग करने लगे । जिनके पास वेद का अधिकार था, उन्होंने ही वेद के गलत अर्थ लगाये । सत्य की जगह असत्य, ज्ञान के स्थान पर अज्ञान व पक्षपात तथा न्याय के स्थान पर अन्याय करते रहे । इसी कारण पन्थ व जातियों का प्रभाव बढता गया । हम सभी में -

* बौद्ध से पहले कौन थे ? - मानव
* चार्वाक से पहले कौन थे ?- मानव
* जैन, लिंगायत से पहले... ? -मानव

सारी दुनियां के पन्थों को देखें, तो भी यही दिखाई देखा कि इस्लाम, ईसाई, पारसी आदि सभी पन्थों के पहले भी सभी लोग मानव (आर्य) ही थे ।

यज्ञ में बलिप्रथा प्रचलित न होती, तो बौद्ध न होते । वेद का गलत अर्थ न लगाते तो वामपन्थी न होतें । मूर्तिपूजा न होती, तो इस्लाम का उदय न होता । आज हम सब को मिलकर इस बारे में सोचना चाहिये । महर्षि दयानन्द ने मानवमात्र के कल्याण हेतु वेदादि आर्ष ग्रन्थों का शाश्वत ज्ञान व सृष्टि विज्ञान, विश्वबंधुता आदि बताकर एक ईश्वर, एक धर्मग्रन्थ- वेद, एक मानवजाति, एक मानव धर्म, एक ही जीवन लक्ष्य और एकही मार्ग बताया तथा मनुष्य को मानवता से संयुक्त होकर केवल मनुष्य बनने का संदेश दिया । स्वयं को वैदिक व सनातनधर्मी बतानेवाले सभी पौराणिक भाई आज अज्ञानी व अन्धविश्वासी बनकर वेदज्ञान को भूलते जा रहे हैं । ऋषि दयानन्द ने जिस वेदमार्ग को बतलाया, उसे स्वीकार करने की इन पौराणिकों मे थोडी भी मानसिकता नहीं हैं । वेद के नाम पर वेद विरूद्ध आचरण करनेवाले तथा मत-मतांतरों को फैलाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाले इन सनातनियों को यह भी पता नहीं है कि सही सनातन धर्म क्या हैं ? विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा गाली के रूप में प्रयुक्त हुए हिन्दू इस शब्द को स्वीकार कर इसी पर स्वाभिमान व्यक्त कर रहे हैं । वेद तथा अन्य आर्ष साहित्य के अतिरिक्त पुराणों में भी हिन्दू शब्द का उल्लेख नहीं हैं । इतना होने पर भी हम हिन्दू शब्द पर इतना गर्व क्यों कर रहें हैं ? आज के वैज्ञानिक युग में भी यह लोग अपनी हठधर्मीता छोडने के लिये

thearyasamaj.org

तैयार नहीं हैं । भारतीय तत्वज्ञान में वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृति, आदि आर्ष ग्रन्थों में कहीं पर हिन्दू शब्द नहीं हैं । इतना ही नहीं, तो रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, पुराण आदि में भी हिन्दू शब्द का उल्लेख नहीं है । ये सभी ग्रन्थ मानवमात्र के कल्याण का ही रास्ता बताते हैं, किन्तु वेद के ही शब्दों को लेकर व उसके गलत अर्थ लगाकर ये पुराणपन्थी लोग गलत आचरण करते रहें और उसी को ही **"वैदिक"** बताते रहें तथा आगे भी वही निभाना चाहते हैं । इन्होंने ही वेद के अध्ययन हेतु दलितों व स्त्रियों पर पाबन्दी लगाई । वेदज्ञान पर उन्हीं का ही अधिकार रहा । जन्म से वर्णव्यवस्था बनाई , जिसका रूपांतरण बाद में जाति के रूप मे किया गया । ये सब वेद को माननेवाले अनेक रूपों में उंचे स्थानोंपर बैठे रहे । गुणात्मक दृष्टि से मानव में अच्छा और बुरा यहीं भेद रहता हैं । स्त्री और पुरूष तो केवल लिंगभेद ही हैं ।

क्या आज श्री भागवतजी यह बता सकते हैं कि हिन्दुत्व क्या है और उसका स्वरूप क्या? हिन्दुत्व को क्या वे सार्वभौम बना सकते हैं ? आज बौद्ध, जैन, वामपन्थी, सिख, लिंगायत आदि सभी लोग स्वयं को हिन्दू नहीं मानते । ख्रिश्चन और मुसलमान तो सभी धर्मान्तरित ही हैं । यह संभी सरसंघचालक श्री भागवतजी के पूर्वजों की ही सन्तानें हैं । ये लोग भी हिन्दू, हिन्दुत्व को नहीं मानते । फिर सभी ने अपने धर्मग्रन्थ बनायें । साथ ही मान्यताएं व धार्मिक भावनाएं भी बनाई । तब तो सोचिएं कि हिन्दू राष्ट्र बनाओंगे तो कैसे ? अंच्छा, तो फिर कोई हिन्दू बनना चाहे, तो आपके पास उसकी भी व्यवस्था नहीं हैं । आर्य समाज के सिद्धान्त व महर्षि दयानन्द के विचारों को नहीं मानोगें, तो क्या करोंगें ? क्या केवल हिन्दू को इसी देश में रखोगे और अन्य मुसलमान, ईसाई आदि अन्य मतवादी लोगों को यहां से निकाल दोंगे या मार डालोंगे ?

आज दुनियां के सभी देशों में विभिन्न लोग, सभी मत-पन्थ व जाति के लोग रहते हैं । वहां की सरकारों को इन सभी को संभालना ही पडता है । हमारे देश का संविधान भी सभी को साथ लेकर चलने की ही बात रहता है । अच्छा, जो देश पन्थवाद (मजहबवाद) की कट्टरता पर चल रहें हैं, वहां भी सुख, शांति, आनन्द आदि कहां विद्यमान हैं ? वहां पर भी आपस में लडाई - झगडे चालू हैं । इस्लामिक देशों में क्यों झगडे हैं ? क्यों एकसंघ राज्य नहीं होता ? भारत का कुछ हिस्सा पन्थवाद के आधार पर अलग हुआ और पूर्व व पश्चिम पाकिस्तान

thearyasamaj.org

बन गया । तो दोनों इस्लामी होते हुए भी अलग-अलग क्यों हो गये ? क्या आज इन दोनों (पाकिस्तान व बंगालदेश) देशों में सुख-शांति स्थापित हो चुकी है ?

श्री भागवतजी को यह भी सोचना चाहिये कि विदेशी आक्रमण होने से पहले भी भारत में क्या एकसंघ हिन्दू राष्ट्र था ? उस समय भी राजा-महाराजा अलग-अलग थे । वे भी आपस में क्योंकर लडते थे ? बाहरी देशों के कुछ ही लोगों ने आकर हमारे पूरे देश पर अनेकों वर्ष तक राज्य किया, तो इसका कारण क्या हैं ? मुसलमानों का साम्राज्य बना, ईसाइयो का राज्य हुआ । हम सब गुलाम बन गये । तो यह गुलामी क्यों आयी ? उस समय आज के ये स्वयं को हिन्दू कहलानेवाले और हिन्दुत्व की व्याख्या बताकर शिक्षा देने वाले कहां थे ? विदेशी सत्ता के शासन में उनके सलाहकार कौन थे ? जहागिरदार, ईनामदार, देशमुख, देशपांडे आदि-आदि नाम उन्हें कौन दिये ? अकबर के दरबार में हमारे जो नवरत्न थे, उनका हिन्दुत्व कहां गया था ? शस्त्र के बलपर धर्मान्तरण जारी था, तब हिन्दू राजा क्या कर रहे थे ? उन्हें बहिष्कृत कर मुसलमान, ख्रिश्चन बनानेवाले कौन थे ? धर्मांतरण को किसने प्रोत्साहन दिया ? छुआछुत जैसी संकीर्णता किसने बनाई ? अपनी सेवा करनेवालों से अपमानजनक व्यवहार किसने किया ? सारे समाज को अज्ञानी बनाकर अपनी आजीविका चलाने तथा सेवा की व्यवस्था कायम करने की व्यवस्था किसने की ? क्या ये सभी बातें भ्रष्टाचार, अन्याय, तथा अमानवीयता में नहीं आती ? इसका ही नाम हिन्दू हैं । इस तरह हिन्दू शब्द सारे संसार में बदनाम हुआ । हिन्दू कहलानेवाले लोगों ने वेदादि शास्त्रों को भी बदनाम किया हैं । इसीलिए भारत में रहनेवाले सभी पन्थवादी, जातिवादी लोगों को सत्य को स्वीकार करने हेतु तत्पर रहना आवश्यक है । अज्ञान, अंधविश्वास, अविद्या आदि को तिलाजंलि देते हुए हम सब भारतीय हैं, मानव हैं और हमारा जीवन लक्ष्य सुख, शान्ति, आनन्द, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा को प्राप्त करना यही है । व्यक्तिगत रूप में हर एक की आत्मा स्वतन्त्र है । वही सुख की इच्छा करनेवाली है । उसे मानवीय मूल्य धारण करने से, प्रामाणिक कर्तव्य करने से और परमात्मा के सान्निध्य में बैठने (उपासना) से ही सुख मिलता है । तो उसे सच्चा परमात्मा भी पता चलना चाहिये । इसी में उसका पूर्ण कल्याण निहित है । ये इच्छा और मार्ग सार्वभौम, वैज्ञानिक और नैसर्गिक है । प्रेम, त्याग,

thearyasamaj.org

समर्पण, ईमानदारी, उदारता ये सभी अच्छी बातें आत्मा को पसन्द हैं । वेदादि आर्ष ग्रन्थ इसी का तो प्रतिपादन व मार्गदर्शन करते हैं । आत्मा की प्रसन्नता ही धर्म हैं । तथा यही पुण्य हैं । आज सारी बातें आत्मा को छोडकर चल रहा हैं । कोई भी पन्थवाद या जातिवाद किसी भी देश पर राज्य नहीं कर सकता । इसीलिए महर्षि दयानन्दजीने कहा था – **'हे संसार लोगों ! फिर एक बार वेदों की ओर लौटो और समग्र विश्व में आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करो ।'**

जो सार्वभौम सत्य को लेकर राज्य करेगा, वही सबको न्याय दे सकता है । हमारा कर्तव्य है कि हम अपने पूर्वजों को याद करते हुए **श्रेष्ठ मानव बनें** । सभी के साथ भाई – बहन का नाता जोडते हुए व आपस में स्नेह, सद्भाव व प्रेम के साथ बर्ताव करते हुए जीवन बिताते रहें । अविद्या, अज्ञान, अंधविश्वास, आपसी द्वेष मत्सर को दूर हटाकर सच्चे अर्थों में भारतीय बनें । हमारी जीवन पद्धति पूर्वजों की भांति आध्यात्मिक बनें और योगाभ्यास को मुख्य आधार बनाकर आत्मकल्याण करते रहे । अपने जीवनोत्थान के साथ ही अपने देशवासियों तथा विश्व के लोगों को सत्य वैदिक धर्म की दिशा देवें । पन्थवाद, जातिवाद को भूल जाना ही सही एकमेव सुख का मार्ग हैं । वेद कहता है – **नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय** । आज मानवमात्र का जीवन धोखे में है । समाजव्यवस्था चहुं तरफ से अधोगति पर है, पर्यावरण पूरी तरह से बिगड गया है । अपने ही देश में सभी पन्थवादी व जातिवादी लोग भी अनेंको समस्याओं से ग्रस्त हैं । पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति अब इस देश में सभी पर हावी हो रही हैं । युवा पीढी सहजता से पाश्चात्य विचारों को स्वीकार कर रही हैं । भारतवर्ष की मूलभूत त्याग, तप, समर्पण की भावना तथा कल्याण की संस्कृति बीच के समय में ही लुप्त हुई हैं और अज्ञान, अंधविश्वास, कुरीतियों व जाति-पन्थवादियों की संस्कृति बढते जा रही है ।

अतः इस देश की जनता को, विशेषतः युवापीढी को मूलभूत वेदाधारित त्याग, तप, समर्पण, विश्वबंधुता, सेवा की संस्कृति सिखाने हेतु प्रयत्न करना चाहिये । जातिवाद व पन्थवाद से उपर उठकर मानवतावाद को बढावा देना चाहिये । सभी मत-पन्थवादियों को अपने पुराने मतभेदों को भूलाकर **'हम सब भारतीय हैं, श्रेष्ठ मानव आर्य हैं, तथा हमारी संस्कृति आत्मा को प्रधान**

thearyasamaj.org

माननेवाली है, इन्हीं विचारों से सुसंस्कारित करना चाहिए। गुणवत्ता व आर्थिक अवस्था के आधार पर सबको पक्षपात विरहित न्याय देना चाहिए। देश का बोधवाक्य है -**सत्यमेव जयते**। अर्थात् सत्य की ही विजय होती हैं, असत्य की कभी नहीं। यही बात जनता को स्वीकारने हेतु प्रेरित करना चाहिए और पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति से बचाना चाहिए। हमारे मानव संसाधन मन्त्रालय द्वारा शिक्षा क्षेत्र में मानवत, चरित्रनिर्माण, ब्रह्मचर्य, संयम, त्याग, तप, समर्पण तथा विश्वबंधुता आदि बातों की शिक्षा व अच्छे संस्कार देने हेतु प्रयास होने आवश्यक हैं। विचारों के साथ आचरण में भी सुधार लाना हैं। हमारे प्रधानमन्त्री श्री मोदीजी सबके हैं। सबके लिए वे काम करते हैं। वे मानवता का प्रसार करें और समग्र विश्व में एक नया आदर्श स्थापित करें।

-आर्य समाज, परली-वै.
मो. ९४२११९५१९०४

शोकसमाचार प्रा. विजयकुमार कुलकर्णी का निधन

औराद शाहजानी ता. निलंगा जि. लातूर स्थित आर्य समाज के मार्गदर्शक, साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता सदस्य प्रा.श्री विजयकुमार मधुकरराव कुलकर्णी का दि. ८ अक्टूबर २०१४ को दोपहर २ बजे दुःखद निधन हो गया। वे ६५ वर्ष के थे। उनके पीछे परिवार में धर्मपत्नी श्रीमती वंदनादेवी, सुपुत्र प्रा.विकास, कन्या सौ. वैभवी, दामाद प्रा.सुमंत तुंगावकर, पुत्रवधू, पौत्रादि हैं। वे गत ३-४ वर्षों से अस्थमा व कर्करोग से पीडित थे। उनपर लातूर, हैदराबाद आदि स्थानों पर उपचार किये गये।

दिवंगत श्री कुलकर्णीजी का सामाजिक परिवर्तन आन्दोलन व शिक्षाप्रसार में प्रशंसनीय योगदान रहा है। युवकों के निर्माता पू. हरिश्चंद्र गुरूजी (स्वामी श्रद्धानन्दजी) के सान्निध्य में आकर छात्रावस्था से ही वे आर्य समाज के मानवतावादी विचारों से जुड गये थे। बाद में वे औराद कार्य किया। के मा.दीनानाथ मंगेशकर महाविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के अधिव्याख्याता व प्रमुख पद पर आसीन हुए। प्रभावशाली अध्यापन के साथ ही युवकों को व्यसनमुक्ति, अन्धविश्वास व जातिप्रथा निर्मूलन कार्य हेतु प्रेरित किया। समाज में जनजागृति के लिए भी आपने प्रयत्न किये। राज्य सरकार के साक्षरता अभियान, ग्राम स्वराज्य, अल्प बचत गट आदि प्रकल्पों में भी वें सम्मिलित हुए। आन्तरभारती व आर्ययुवक परिषद जैसे संगठनों से जुडकर आपने कार्य किया

thearyasamaj.org

हैं। स्वयं का और अपने परिवार के कन्या व पुत्र भी आपने अन्तर्जातीय विवाह कर उन्होंने जन्मगत जातिप्रथा नष्ट करने में सक्रिय भूमिका निभाई है। अनेकों अखबारों में उनके वैचारिक लेख प्रकाशित होते रहे। आज तक उनके लगभग ९ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। प्रभावी वक्ता के रूप में भी उनकी पहचान थी। उनके द्वारा प्रस्तुत **'एक था बूढा'** इस मराठी पथनाट्य को राज्य सरकार का पुरस्कार मिला है। किल्लारी (लातूर) के भूकम्पपीडितों को मानसिक आधार देने में उनकी भूमिका रही हैं। मा.दी.म. शिक्षा संस्था को बढाने तथा आर्य समाज को संवर्धित करने में भी आप सक्रिय रहे हैं।

दिवंगत श्री कुलकर्णीजी के पार्थिव पर दूसरे दिन ११ बजे पं. सुधाकर शास्त्री, प. प्रकाश कच्छवा आदियों के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये। इस अवसर पर सर्वश्री पूर्व सांसद डॉ. जनार्दनरावजी वाघमारे, प्रा.श्याम आगळे, प्राचार्य गहरेवार, विश्वनाथ वलांडे गुरूजी, पूर्व विधायक श्री मुळे, आर्य प्र. सभा के प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी आदियोंने श्रद्धासुमन अर्पित किये। अन्तयात्रा में भारी संख्या में लोग सम्मिलित हुए।

विजयसिंह गायकवाड का देहावसान

जबलपुर (म.प्र.) के प्रतिष्ठित आर्य कार्यकर्त्ता श्री विजयसिंहजी गंगाधरराव गायकवाड का गत २७ सितम्बर को प्रातः ६ बजे हृदयाघात से दुःखद निधन हुआ। मृत्यु समय उनकी आयु ७३ वर्ष की थी। वे अपने पश्चात् धर्मपत्नी श्रीमती मीरादेवी, दो सुपुत्र एवं एक कन्या, दामाद, स्नुषा, पौत्रादि परिवार को छोडकर विदा हो गये

म.प्र.व विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ पदाधिकारी तथा **आर्यसेवक** मासिक के सम्पादक श्री जयसिंहजी गायकवाड के वे छोटे भाई थे। उन्होंने **जबलपुर** स्थित आर्य समाज, गोरखपूर के कोषाध्यक्ष का पदभार कई वर्षों तक संभाला। साथ ही प्रान्तीय सभा के उपमन्त्री के रूप में भी आपने कार्य किया था। गतं कई वर्षों से उनका स्वास्थ्य सामान्य सा चल रहा था। बारह वर्ष पूर्व उनपर हृदयरोग की शस्त्रक्रिया की गई थी। फिर भी उतने ही उत्साह के साथ वे पारिवारिक का निर्वहन करते रहे। दिवंगत श्री गायकवाडजी के पार्थिव शरीर पर दूसरे दिन ११ बजे पूर्ण वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये। इस अवसर पर जबलपुर नगर के प्रतिष्ठित नागरिक तथा आर्यजन भारी संख्या में उपस्थित थे। डॉ. श्री ब्रह्ममुनिजी ने जबलपुर पहुंचकर श्रद्धासुमन समर्पित किये।

दिवंगत आत्माओं की शान्ति व सद्गति हेतु कामना तथा भावभीनी श्रद्धाजंलि !

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश — ईश्वराचे स्वरूप

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभू याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः
(ईशोपनिषद् ८)

तो परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त आहे. तो अतिशुद्ध, शरीरविरहित आहे. तसेच तो व्रणरहित, नसनाडी विरहित, मलरहित (पवित्र), पापरहित (दोषरहित), क्रान्तदर्शी (भविष्यदर्शी), मनन करणारा (ज्ञानी), सर्वत्र विराजमान, स्वयंपूर्ण, चांगल्या प्रकारे पदार्थांना (सृष्टीला) रचणारा आहे. तो निरंतर व्यवधानशून्य असून अनेक वर्षांपासून सृष्टीचा महाप्रबंधक (व्यवस्थापक) आहे.

दयानंदांची अमृतवाणी

'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथाचा उद्देश

मनुष्याचा आत्मा सत्यासत्य जाणणारा असतो. तथापी आपला स्वार्थ, हट्ट, दुराग्रह आणि अज्ञान वगैरे दोषांमुळे तो सत्याला सोडून असत्याकडे वळतो. **सत्यार्थ प्रकाश** या ग्रंथात असे कांही करण्यात आले नाही. कोणाचे मन दुखवावे अथवा कुणाचे नुकसान करावे, असा आमचा हेतू नसून मनुष्य जातीची उन्नती व्हावी, तिचे भले व्हावे, माणसांनी सत्यासत्य ओळखून सत्याचा स्वीकार व असत्याचा त्याग करावा, या हेतुने हे लिखाण करण्यात आलेले आहे. कारण सत्योपदेशा व्यतिरिक्त इतर कोणत्याही गोष्टीने मनुष्य जातीची उन्नती होऊ शकत नाही.

(सत्यार्थ प्रकाश - भूमिका)

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः

- मोहीभूत उन्मत्त जग -

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितम्
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरूभिः कालो न विज्ञायते ॥
दृष्ट्वा जन्मजराविपत्तमरणं त्रासश्च नोत्पद्यते
पीत्वा मोहमयी प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत् ॥

अर्थः- सूर्याच्या उदयास्तांनी आयुष्य क्षीण होत आहे. परंतु मोठमोठ्या उद्योगाच्या भरामुळे ते ध्यानात येत नाही. हे असो, परंतु जन्म, मरण, जरा इत्यादी दुःखे प्रत्यक्ष दिसत असतानाही त्यांचे आपणास काहीच वाटत नाही तस्मात असावधपणाची मोहरूपी मदिरा प्राशन करून हे संपूर्ण जग उन्मत्त होऊन गेले आहे, असे वाटते (भर्तृहरिविरचित - वैराग्यशतकम् - ४१)

- प्रांतीय सभेतर्फे राज्यस्तरीय दोन वक्तृत्व स्पर्धा

पू. पिताश्री स्व.विठ्ठलराव बिराजदार (तांभाळकर) स्मृती

१) राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१४

विषय :- 'महर्षी दयानंदाचे मानवतेचे विचार'

रविवार, दिनांक ३० नोव्हेबंर २०१४, वेळ :- सकाळी ११.०० वाजता

स्थळः आर्य समाज, किल्ले धारूर जि. बीड

१) या स्पर्धेत केवळ माध्य.विद्यालयाच्या (इयत्ता ८,९,१० वी वर्गाच्या) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
२) या स्पर्धेसाठी प्रत्येक विद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.
३) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी/हिंदी भाषेतून बोलण्यासाठी फक्त ८ (६+२) मिनीटे वेळ दिला जाईल.
४) प्रवेश शुल्क रु. ५०/- भरून दि. २७ नोव्हबंर २०१४ पर्यंत स्पर्धेचा नोंदणी करावी.

सौ कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनंदमुनिजी) यांच्या गौरवार्थ

२) राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१४

विषय :- 'महर्षी दयानंदाचे राष्ट्रीय विचार'

रविवार, दिनांक २१ डिसेंबर २०१४, वेळ :- सकाळी ११.०० वाजता

स्थळः आर्य समाज, कस्तुरबा मार्केट, सोलापुर

१) या स्पर्धेत ११ वी ते पदवी वर्गापर्यंत शिकणाऱ्या महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
२) या स्पर्धेसाठी प्रत्येक महाविद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.
३) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी/हिंदी भाषेतून बोलण्यासाठी फक्त ८ (६+२) मिनीटे वेळ दिला जाईल.
४) प्रवेश शुल्क रु. ५०/- भरून दि. १५ डिसेंबर २०१४ पर्यंत स्पर्धेचा नोंदणी करावी.

thearyasamaj.org

पितर श्राद्ध नव्हे, वैदिक पितृ-यज्ञ

-माधवराव देशपांडे

'पितृ यज्ञ' हा शब्द दोन शब्दांनी मिळून बनलेला आहे. एक पितृ आणि दुसरा यज्ञ। पितृ चा अर्थ होतो - पिता ! आई आणि वडील दोघानांही पितृ शब्दाने संबोधिले जाते. जसे- **'माता च पिता च पितरौ'** (एकशेष द्वंद्व समास)। आई आणि वडील या दोन शब्दांचा द्वन्द्व समास बनतो. म्हणून **पितरौ** शब्द तयार होतो. अर्थात् पितृ या शब्दाचा अर्थ आई आणि वडील असा होतो.

पितृ या शब्दाची प्रथमा विभक्ती **पिता** अशी होते. संस्कृत भाषा न शिकलेलाही समजतो की पिता जीवंत असलेल्या वडिलासच म्हणतात आणि पितर मृत्यू पावलेल्या वडिलांना म्हणतात. परंतु संस्कृत भाषेत असा अर्थ होत नाही. मूळ शब्द पितृ आहे. जेव्हा या शब्दाचे कर्ताकारक रूप बनते, तेव्हा पिता हा शब्द बनतो. जेव्हा कर्मकारक रूप बनते, तेंव्हा **पितरम्** शब्द बनतो. पितरम् चे अनेकवचनी रूप बनते-**पितरः** ! अशा प्रकारे पितृ अथवा पितर या शब्दामध्ये दुरान्वयाने सुद्धा मृत्युविषयी संकेत नाही. म्हणून पितृ किंवा पितर या शब्दाचा वापर मृत्यू पावलेल्या वाडवडिलांविषयी वापरला जातो. ही मोठी चूक आहे. जीवंत आई-वडिलांविषयी हा शब्द वापरला जात नाही, असे म्हणणे देखील चुकीचे आहे. आजोबा, आजी (दोन्ही कडील) यांच्यासाठी सुद्धा पितृ शब्द वापरला जातो. यज्ञ शब्दाचा अर्थ आहे - **पूजा किंवा सत्कार** ! कांही लोकांचे असे म्हणणे आहे की यज्ञ आणि हवन हे शब्द एकाच अर्थाचे आहेत. हे सुद्धा बरोबर नाही. हवनाला सुद्धा यज्ञ म्हणतात. तरी सुद्धा **यज्ञ** शब्द अन्य अर्थाने सुद्धा वापरला जातो. यज्ञ या धातूपासून यज्ञ शब्द बनतो. त्याचा अर्थ होतो - **देवपूजा, संगतिकरण आणि दान !** म्हणून यज्ञाचा अर्थ केवळ हवन नाही. **ब्रह्मयज्ञाचा** अर्थ आहे - स्वाध्याय अथवा ईश्वराचे ध्यान. अतिथियज्ञचा अर्थ आहे - पाहुण्याचा सत्कार व सेवा करणे होय. ज्ञानयज्ञाचा अर्थ आहे - ज्ञानदान ! इथे यज्ञाचा अर्थ ना होम आहे किंवा हवन ! ना आहुती देणे न एखाद्या पशूचा बळी देणे.

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् ।
होमो देवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्

अर्थात शिकणे, शिकविणे याचे नाव ब्रह्मयज्ञ ! तर्पण म्हणजे पितृयज्ञ ! तर होम म्हणजे देवयज्ञ ! पशूंना अन्न देणे म्हणजे भूतयज्ञ तर **अतिथि सत्कार** म्हणजे **नृयज्ञ** होय. या ठिकाणी केवळ देवयज्ञ या शब्दात यज्ञाचा अर्थ होम हवन असा आहे, तर इतरत्र यज्ञ शब्दाचा अर्थ **पूजा आणि सत्कार** हाच आहे.

thearyasamaj.org

अशा प्रकारे आपण पाहिले की **पितृ** म्हणजे माता-पिता आणि **यज्ञ** चा अर्थ आहे - सत्कार सेवा इत्यादी ! म्हणून पितृ-यज्ञ या शब्दाचा अर्थ होतो माता-पिता, आजी-आजोबा, वाडवडील यांची सेवासुश्रूषा ! आता प्रश्न उद्भवतो की पितृयज्ञ मेलेल्या आई-वडिलांचा होतो का जिवंत असलेल्या आई वडिलांचा ? यात जनमानसात मतभेद आहेत. आम्ही असे पाहतो की महालयाच्या (१५ दिवस) किंवा पितृ-पंधरवाड्याच्या वेळी अनेकजण आपल्या मृत झालेल्या आई-वडिलांचे, पूर्वजांचे श्राद्ध-तर्पण करतात. या १५ दिवसाला पितृपक्ष असे म्हणतात. कारण या काळात आपल्या पूर्वजांचे मृत, आईवडिलांचे श्राद्ध केले जाते. आपण वर असे पाहिले की **पितृ** या शब्दाचा अर्थ मृत वाडवडील असा दुरान्वयाने ही होत नाही. सांकेतिक अर्थ पण होत नाही. आता आपण असे पाहू की काय मृत व्यक्ती कुणाची माता-पिता होऊ शकते काय ? प्रश्न गहन आहे. गांभीर्याने विचार करणे आवश्यक आहे. यात कुणाच्या भावना दुखविण्याचा उद्देश्य नाही. पण विचारांना चालना देणे हाच उद्देश्य आहे.

विशेष शरीरधारी जीवास **मनुष्य** म्हणतात. केवळ शरीर किंवा केवळ जीवात्म्यास मनुष्य म्हणता येत नाही. जेंव्हा शरीरातून जीव निघून जातो, तेंव्हा त्यास मनुष्य म्हणत नाहीत, तर त्यास मनुष्याचे प्रेत म्हणतात. तो जीव सुद्धा मनुष्य नव्हे कारण वैदिक मान्यतेनुसार तो मनुष्या शिवाय सुद्धा अन्य शरीर धारण करू शकतो. जीवात्म्यास शरीरामुळेच अस्तित्व प्राप्त होते. जो आज मानवी शरीरात आहे, तो मृत्युनंतर कोणत्या शरीरात जाईल, हे आपणांस कळू शकत नाही. सम्भवतः पुन्हा कधीतरी त्यास मानवी शरीर मिळू शकते. म्हणून ना तर शरीरास आई-वडील म्हणतात, ना केवळ जीवात्म्यास ! जोपर्यंत आमचे माता-पिता, वाडवडील, आजी-आजोबा जीवंत आहेत, तोपर्यंतच ते माता-पिता, आजी-आजोबा आहेत. जेंव्हा त्यांचा मृत्यू होतो, तेंव्हा त्यांचे प्रेत होते व त्याचा अंतिम संस्कार, होतो किंवा प्रथेप्रमाणे इतर संस्कार करण्यात येतात. न्याय दर्शनच्या तिसऱ्या अध्यायात म्हटले आहे -

शरीरदाहे पातकाभावात् ।

अर्थात् प्रेतास अग्नी दिल्यामुळे पाप लागत नाही. लौकिक कायद्यान्वये सुद्धा हा गुन्हा नव्हेः! कारण ज्या वस्तूस आम्ही अग्नीच्या स्वाधीन केले, ती वस्तू ना तर आई-वडील, ना वाडवडील, ना आजी-आजोबा होते, ते तर त्यांची प्रेते आहेत.

आता पुढील प्रश्न असा आहे की मृत्युनंतर आमचे आई-वडील कोठे जातात ? काय ते जीव आई-वडील आहेत ? कदापी नाहीत. विश्वास ठेवणे कठीण आहे, पण हे सत्य आहे. त्या जीवास पितृ म्हणता येत नाही. कारण मृत्युनंतर कोण जाणे,

thearyasamaj.org

त्यांनी कुठे जन्म घेतला असेल ? शक्य आहे की तेच जीव आमच्याच घरी नातू, पणतू, पुत्र रूपाने पुन्हा जन्म घेतील ! इतिहासात अशा कल्पना, धारणा आढळून येतात. नातवास आजोबाचे नाव दिले जाते. अथवा आपापल्या कर्मानुसार उच्च किंवा नीच योनी प्राप्त होऊ शकते. किंवा परम योगी असतील तर त्यांची मुक्ती सुद्धा झाली असेल ! जर आमचे माता-पिता आमचे पुत्र बनून पुन्हा जन्म घेतील, तर ते आमचे पुत्र होतील व आम्ही त्यांचे पितृ होऊत. ते आमचे पितृ असणार नाहीत. वस्तुतः माता-पिता, आजी आजोबा ही नाती जीवंत असे पर्यंतच अस्तित्वात असतात. मृत्यू होताच हा संबंधविच्छेद होतो. जेंव्हा त्यांचा मृत्यू होतो. तेव्हा आपण म्हणतो की आमचे आई वडील मेले, परन्तु वास्तविक ते मरत नाहीत. जीवात्मा नेहमीसाठी अमर आहे. म्हणून माता-पित्याची संज्ञा पितृ म्हणून केवळ भूतकाळाच्या अपेक्षेनेच असते. वर्तमान काळाच्या अपेक्षेने नव्हे, कारण हे नातेसंबंध केवळ भूत काळातच होतात. वर्तमान काळी असू शकत नाही. म्हणून आम्ही असे म्हणतो की आमचे पूर्वज धनाढ्य होते, विद्वान होते, निर्धन होते. ज्ञानी होते. परंतु कोणीही असे म्हणत नाही की आमचे माता-पिता या योनीमध्ये आहेत किंवा त्या प्राण्याच्या शरीरात आहेत ! कारण आमच्या बरोबरच त्यांचे नातेसंबंध अथवा त्यांचे पितृत्वाचे नाते मृत्यू सोबतच समाप्त झाले.

म्हणून पितृ-यज्ञ केवळ जीवंत माता-पित्याशीच सबंधीत आहे. मृत्यू पावलेल्या माता-पित्याशी त्याचा कांहीही संबंध नाही. यालाच मग श्राद्ध म्हणा किंवा तर्पण ! म्हणून मृत्युनंतरचे श्राद्ध उचित नाही. भाद्रपद महिन्यातील कृष्ण पक्षास पितृ पक्ष म्हणणे चुकीचे आहे. जर आमचे आई-वडील, आजी-आजोबा जीवंत असतील, तर सुदैवाने आमच्यासाठी समस्त वर्षच **पितृ-पक्ष** आहे. कारण त्यांची नित्य सेवा व सत्कार करणे आमचे कर्तव्यच आहे. परन्तू जर त्यांचा मृत्यू झाला असेल तर भाद्रपद महिन्यातील कृष्ण पक्षात ते कुठून येतील ? म्हणून श्राद्ध हे जीवंत पणीच करणे उत्तम आहे.

मन्वर्थ मुक्तावली मध्ये श्री कुल्लुक भट्ट हे **पितृ** शब्दाचा अर्थ **वृद्ध माता-पित्रादयो** । अर्थात वृद्ध माता-पिता असा करतात. हा श्लोक सुद्धा जेथे पंच महायज्ञाचे वर्णन आहे, तिथलाच आहे. प्रसंग पितृ-यज्ञाचा आहे. म्हंणून **पितृयज्ञ** हा वृद्ध माता पित्याचाच असतो, मृत माता-पित्याचा नव्हे ! याला पुष्टी मिळते. या ठिकाणी कुल्लुक भट्ट यांनी **अन्न** देण्याचे वर्णन केले आहे. अर्थात् देवता, अतिथी, भृत्य, पितृ, आणि आत्मा यांना अन्न पुरविले पाहिजे, असे म्हटले आहे. यात मृत्यू पावलेले अतिथी, भृत्य यांचे वर्णन नाही. मग पितरांनाच मृत का मानावे ? ज्याप्रमाणे

thearyasamaj.org

अतिथी यज्ञ जीवंत अतिथीचा आहे, त्याच प्रमाणे पितयज्ञ सुद्धा जीवंत आई वडिलांसाठीच असला पाहिजे.

पुढे कुल्लुक भट्ट लिहितात –

एते गृहस्थेभ्यः सकाशात्पार्थयन्ते ।

अर्थात् ऋषी, पित्त, देव, भूत आणि अतिथी हे गृहस्थाकडूनच अन्न, पाणी (पिंड आणि उदक) याची अपेक्षा ठेवतात. यावरून सुद्धा स्पष्ट होते की ऋषी, देव, पितर, आणि अतिथी सर्व जीवंतच आहेत, मृत नव्हेत ! पुढील श्लोक तर सूर्य प्रकाशाइतका स्पष्ट आहे –

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्देनोदकेन वा ।
पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमावहन्

अर्थात् **(अहरहः)** प्रतिदिनी श्राद्ध करा ! कशा प्रकारे ? अन्न, जल, दूध, कन्दमूल–फळे देऊन ! कुणाचे श्राद्ध करा ? **(पितृभ्यः)** पितरांचे ! कशाप्रकारे ? **(प्रीतिमावहन्)** प्रेमपर्वूक बोलावून ! इथे तीन गोष्टी सांगितल्या आहेत–

१) दररोज श्राद्ध करावे.
२) अन्न, जंल, दुध, कन्दमूल, फळ द्यावे.
३) प्रेमपूर्वक बोलावे

या तिन्ही गोष्टी जीवंत असेपर्यंतच शक्य आहेत, मृत्युनंतर नव्हे. यात ना तर पितृपक्षाचे वर्णन आहे, ना गया येथील पिंडदानाचे, ना तर कावळ्यांना पिंड देण्याचे ! जीवंत आई – वडील, आजी–आजोबा, जे आज वृद्ध झाले आहेत, त्यांच्यासाठीच प्रतिदिनी श्राद्ध करण्याचे विधान आहे. जर मृत पितरांसाठी असते तर त्यांना प्रेमाने बोलावण्याचा, बोलण्याचा प्रश्नच उद्‌भवत नाही. काय ते वर्तमानातील आपली आपली काया सोडून येऊ शकतील ? जर असे झाले, तर त्यांचे सोडलेले शरीर इतर लोक सुरक्षित ठेवतील काय ? कदापी नाही. मृत पितरांचे श्राद्ध करणे अशक्य असून तो असम्बद्ध कार्य करण्याचा प्रयत्न करण्यासारखा आहे.

मग असाही एक प्रश्न मनात येतो की मृतक श्राद्धाची प्रथा केंव्हा सुरू झाली ? काय याचा उल्लेख संस्कृतशास्त्रात कुठेतरी आहे किंवा नाही ? होय, स्वतः मनुस्मृतीमध्ये, गरूड पुराणा मध्ये, कूर्म पुराणामध्ये याचा उल्लेख आढळून येतो या ठिकाणी मृतक श्राद्धाबरोबरच हिंसायुक्त कृतीचा व मांसाहाराचा पण उल्लेख आहे. म्हणून अशा प्रकारचे श्राद्ध कुणी करत नाही. याचा असा अर्थ आहे की कांही स्वार्थी लोकांनी या ग्रंथात भेसळ करून मूळ ग्रंथास दूषित केले आहे. बुद्धिमान लोकांनी थोडा विचार केल्यास तात्काळ सत्य काय आहे ? हे त्यांच्या लक्षात येईल.

आपण थोडक्यात पाहिले की मृतक श्राद्ध अनुचित असून ते असम्भव सुद्धा आहे. असम्भव यासाठी की आमच्याकडे असा कोणताही उपाय नाही की ज्याद्वारे त्या जीवांना, ज्यांना आपण जीवंत असतांना माता–पिता म्हणत होतो, कांही अन्न पुरवू शकू. मृत्युनंतर प्राण्याची

thearyasamaj.org
अवस्था दोन प्रकारची असू शकते. एक तर मुक्त होऊ शकतात अथवा पुन्हा नवीन शरीर धारण करून जन्म घेऊ शकतात. जर मुक्ती मिळाली, तर त्यांना अन्नपाणी, श्राद्ध तर्पण यांच्याशी कांहीही कर्तव्य किंवा प्रयोजन उरत नाही. प्राकृतिक पदार्थांशी त्यांचा संबंध राहत नाही. जर त्यांना पुन्हा जन्म मिळाला असेल तर किंवा कोणत्याही प्रकारचे शरीर त्यांनी धारण केले असेल, तर हे अन्न पाणी आम्ही त्यांच्या शरीराद्वारेच त्यांचे पर्यंत पोंचवू शकतो. केवळ नदीमध्ये जलदान करणे अथवा पुरोहितांना भोजन देऊन अथवा कावळ्यांना पिंड देऊन त्यांच्या पर्यंत पोंचवू शकत नाही, म्हणून ही क्रियाकर्मे सर्व व्यर्थ व भ्रममूलक ठरतात.

यावर कांही जणांचे असे म्हणणे आहे की आम्ही हे क्रियाकर्म, श्राद्ध केल्याने त्यांचे फळ आमच्या पूर्वजांना मिळेल. असे झाले तर महाअनर्थ घडेल, कारण वैदिक कर्मफळ सिद्धांतानुसार जो कर्म करतो व जो कर्ता असतो, त्यालाच त्या कर्माचे फळ मिळते. जर दुसऱ्यांना एकाच्या कर्माचे फळ मिळू लागले, तर अनर्थ होईल, अन्याय होईल. ईश्वरीय व्यवस्थेनुसार पुढील जन्म तर मृत्यू झाल्याबरोबर मिळतो, मग आमच्या कर्माचे फळ आमच्या मृत पितरांना कदापी मिळू शकणार नाही.

कांही जणांचे असे म्हणणे असते की चला या निमित्ताने ब्राह्मणांना भोजन, दान, दक्षिणा देण्याचे पुण्य तरी मिळेल. परंतु त्यांचा हा विचारसुद्धा संयुक्तिक वाटत नाही. ब्राह्मणांना, भुकेलेल्यांना भोजन देण्या विषयी दुमत असण्याचे कांहीही कारण नाही, न कावळ्यांना, न माशांना खावयास अन्न देण्याविषयी ! कारण ऋषिमुनी अथवा अतिथी ब्राह्मण यांना भोजन देणे **अतिथी यज्ञ** आहे. कावळे, कुत्रे, **किडे**, मुंग्या, मासे यांना अन्न देणे **भूतयज्ञ** आहे. अज्ञानापोटी अथवा धोक्याने फसवून जर आपण अतिथी यज्ञ करू, तर ते चूक आहे. जर अतिथी यज्ञ करावयाचा, तर तो अतिथीयज्ञ म्हणूनच करावा. भूतयज्ञ करावयाचा तर तो भूतयज्ञच म्हणूनच करावा. जर आम्ही अतिथी यज्ञ व भूत यज्ञ करू व त्यास पितृयज्ञ म्हणू, तर ते उचित नव्हे ! यात भ्रम निर्माण होतो. अज्ञाना पोटी केलेल्या कार्याने इच्छित फळ मिळत नाही.

खरे पाहू जाता, मृतक श्राद्धाचा सिद्धान्त वैदिक नव्हे ! याचे मूळ मृतकाच्या आत्म्याची पूजा करण्याच्या संकल्पनेत आहे. अथवा अशा संप्रदायायाचे मूळ आहे, जो की सम्प्रदाय पुनर्जन्म मानत नाही. फार पूर्वी पाश्चिमात्य देशात लोकांना याचे ज्ञान नव्हते की मृत्युनंतर जीवाचे काय होते ? म्हणूनच एखाद्याचा मृत्यू झाल्यावर त्याच्या प्रेताबरोबर भोजन, आवडीच्या वस्तू सुद्धा पुरविल्या जात होत्या. कल्पना अशी असावी की या वस्तूंची जीवास कदाचित गरज पडेल ! जीवाचे अस्तित्व प्रेताशी निगडीत असल्याची कल्पना आज ही

thearyasamaj.org

अनेकात आहे, परन्तु वैदिक संस्कृतीतील लोक सुद्धा, ज्यांच्या पुनर्जन्मावर विश्वास आहे, ते सुद्धा कांही अंधश्रद्धेवर विश्वास ठेऊन भ्रममूलक क्रियाकर्म करतात.

वस्तुतः पितृयज्ञ म्हणजे जीवंत माता-पिता, वाडवडील, आजोबा-आजी यांची सेवा-सुश्रूषा श्राद्ध पूर्वक करणे होय. आता वृद्ध झाले आहेत, आता स्वतः धन कमविण्याच्या योग्यतेचे नाहीत. त्यांनी आम्हावर अनंत उपकार केले आहेत. आमचे पालन पोषण करून, ज्ञानसंपन्न करून जगण्यायोग्य असे मोठे केले आहे. नसता मनुष्यास शिकविल्या शिवाय ज्ञान प्राप्त करणे कदापी संभव नाही, त्यांनी आम्हांस जन्मल्या बरोबर आम्ही जसे होतो, तसे स्वीकारले, प्रेमाने संगोपन केले, काळे - कुरूप, अपंग, मंतिमंद.... जसे होतो, तसेच तिरस्कार न करता स्वीकारले होते. मग काय आम्ही आज आमचे माता-पिता, आजी-आजोबा यांना वृद्धपणी जसे आहेत, तसे तिरस्कार न करता प्रेमाने स्वीकारू शकत नाही ? त्यांची जीवंतपणीच अन्न, पाणी (पिण्डोदक) औषध व पाणी प्रेमाने देऊन सेवा सुश्रूषा करणे म्हणजेच **पितृयज्ञ** होय. मृत्युनंतर केलेले कोणतेही कृत्य त्यांचे पर्यंत पोहोचू शकत नाही. त्याची जाणीव सर्वांना आहे. तरी पण अनेकजण हे जाणून सुद्धा मृतक श्राद्धासमान भ्रममूलक क्रियाधर्म करीतच असतात. किंबहुना यांत वाढ होतच आहे. यामागील कारण काय असावे ? मृत्युनंतरचे करण्यात येणारे सोपस्कार पाहिल्यानंतर असे वाटते की या मागे समाजातील लोकेष्णा तर नसावी ? जीवंतपणी आपण वृद्ध माता-पित्यांशी कसे वागतो ? हे चार भिंतीत गुप्त राहते ! पण मृत्युनंतरचे वागणे पाहिल्यावर अशी शंका मनात येणे साहजिकच आहे. आज वृद्ध माता-पित्यांचे जगणे पाहिल्यानंतर याला पुष्टी मिळते, जर आम्ही **वैदिक कल्पनेतील पितृयज्ञ** (जीवंतपणीच, पिंडोदक औषध, पाणी, सेवासुश्रूषा प्रेमपूर्वक करणे) प्रामाणिकपणे केला, तर वृद्धांचे जीवन आयुष्याच्या शेवटी आनन्दमय होईल. लहानपणी आमच्या माता-पित्यांकडून आमच्या अपेक्षा प्रचंड होत्या, पण वृद्धपणी याच अपेक्षा अगदी किमान होतात. त्यांच्या उपकारास पितृ ऋण म्हणतात. या पितृ-ऋणातून मुक्त होण्याचा उपाय म्हणजे **पितृ-यज्ञ** होय. हा यज्ञ केवळ पंधरा दिवसात करावयाचा नसून वर्षभर करावयाचा आहे. यामुळे आम्हांस वाडवडिलांचा आशीर्वाद मिळून आपलेच कल्याण होते. म्हणून जोपर्यंत आम्हांस हे ज्ञान होणार नाही की पितृ-यज्ञाचा संबंध मृत व्यक्तीशी नसून जीवंत व्यक्तीशी आहे, तो पर्यंत खऱ्या पितृयज्ञा विषयी श्रद्धा निर्माण होणार नाही व आई वडिलांची उपेक्षा होतच राहील.

-रो.हाऊस नं. ३, साई अव्हेन्यु,
पिंपळे सौदागर, पुणे -१७
मो. ९८२२२९५५४५

* * *

thearyasamaj.org

शोक वार्ता

श्रीमती गुणाबाई कुल्ले यांचे निधन

आर्य समाज शिवणखेडचे कार्यकर्त्ते श्री चंद्रकांत कुल्ले यांच्या मातु:श्री श्रीमती गुणाबाई कुल्ले यांचे दि. ७ सप्टेंबर २०१४ रोजी सकाळी ६ वा. वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ८७ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या पश्चात ३ मुले व ४ मुली, सुना, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे. श्रीमती गुणाबाईंनी आपले दिवंगत पती स्वा.सै. शंकरराव कुल्ले यांनी बजावलेल्या राष्ट्रसेवा, सामाजिक व धार्मिक कार्यात **सहधर्मचारिणी**च्या रूपाने मोलाचे कार्य केले. आपल्या कुटूंबियांवर आर्य समाजाचे संस्कार देण्यात व पारिवारिक विकास कार्यात त्यांनी मोठी भूमिका बजावली होती. श्रीमती कुल्ले यांच्या पार्थिवावर पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. सुगावचे आर्य कार्यकर्ते श्री अशोकराव कातपुरे, स्थानिक पदाधिकारी सर्वश्री बभ्रुवाहन शिंदे, विजयपाल कुल्ले, व्यंकटराव कुल्ले, विद्यासागर आरदवाड, किशनराव शिंदे, चामे आदींनी अंत्यविधी पार पाडला.

सभेचे उपदेशक पं. सुधाकर शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली शांतियज्ञ पार पडला.

डॉ. शिवाजी माने यांचे निधन

बेडगा ता. उमरगा जि.धाराशिव येथील आर्य समाजाचे प्रधान डॉ.श्री शिवाजी मारूतीराव माने यांचे नुकतेच दुःखद झाले. मृत्युसमयी ते ७० वर्षांचे होते. त्यांच्या मागे पत्नी प्रभावती, आई जीवनाबाई, ३ मुले राजेंद्र, विजयकुमार, रविंद्र व चार मुली, जावई असा परिवार आहे.

डॉ. श्री माने हे आर्य समाजांच्या विचारांचे पक्के अनुयायी होते. महर्षी स्वामी दयानंदाच्या वैदिक सिद्धांतावर त्यांची अगाध निष्ठा होती. आर्यमय जीवन जगत ते इतरांनाही प्रेरणा देत असत. आर्य समाजाच्या विचारांचा प्रचार व प्रसार करण्यासाठी त्यांनी अहोरात्र प्रयत्न केले. त्यांच्याच मार्गदर्शनाखाली बेडगा आर्य समाजाच्या इमारतीचे ही काम पूर्ण झाले.

दिवगंत श्री माने यांच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

दिवंगत आत्म्यांना सभा व आर्यजनांतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली व शांती साठी प्रार्थना !

thearyasamaj.org

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन

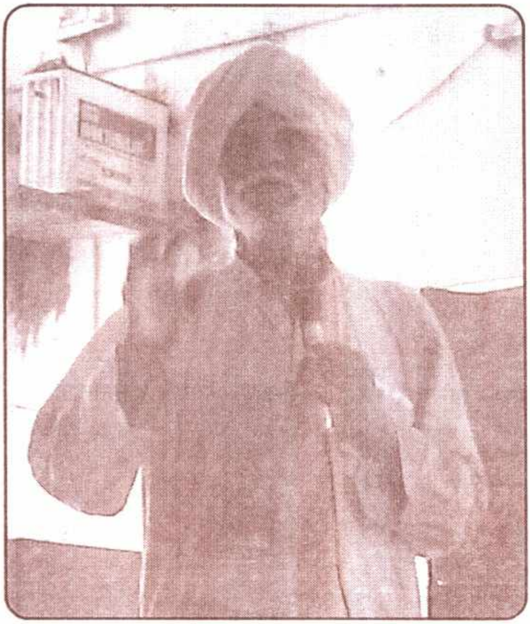

पदभार ग्रहण करने पर आर्यों को सम्बोधित करते हुए सभा के नूतन प्रधान डॉ. श्री ब्रह्ममुनिजी।

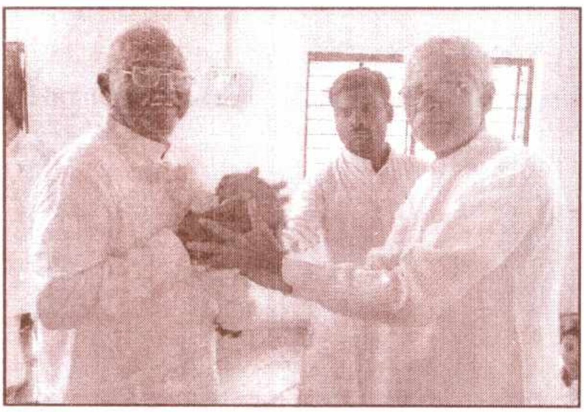

उपप्रधान श्री राजेन्द्रजी दिवे का अभिनन्दन करते हुए आर्य समाज परली के व्यवस्थापक श्री रंगनाथजी तिवार व श्री तानाजी शास्त्री

उपमन्त्री श्री लखमसी भाई वेलानी का अभिनन्दन करते हुए आर्य समाज परली के वरिष्ठ सदस्य श्री देविदासरावजी कावरे।

thearyasamaj.org

प्रान्तीय सभा के नूतन पदाधिकारियों का हार्दिक अभिनन्दन !

मन्त्री–माधवराव देशपांडे

कोषाध्यक्ष–उग्रसेन राठौर

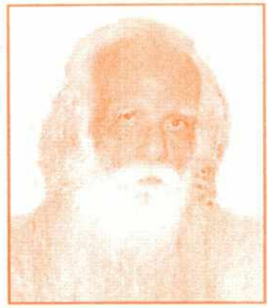

संरक्षक–स्वामी श्रद्धानन्दजी

उपप्रधान–दयाराम बसैये

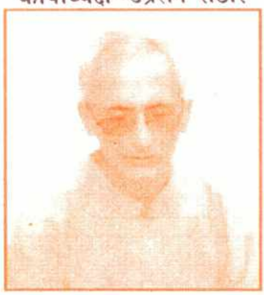

उपप्रधान–योगमुनिजी

उपप्रधान–राजेन्द्र दिवे

उपमन्त्री–प्रा.देवदत्त तुंगार

उपमन्त्री–लखमसी वेलानी

उपमन्त्री–शंकरराव बिराजदार

Reg.No.RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,

श्री

प्रेषक –
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समजा, परली वैजनाथ–४३१५१५
जि.बीड (महाराष्ट्र)